नवसर्जन संस्कृति

RNI No.: UPHIN/25/A1698
NAVSARJAN SANSKRUTI

नवसर्जन संस्कृति

लखनऊ से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 336
दि. 09.04.2026,
गुरुवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

उत्तर प्रदेश सरकार ने कर्मियों की पारदर्शिता बढ़ाने के लिए मानव संपदा पोर्टल में किया बड़ा सुधार

लखनऊ। उत्तर प्रदेश सरकार ने सरकारी कर्मचारियों की प्रशासनिक जवाबदेही और पारदर्शिता को बढ़ाने के उद्देश्य से एक ऐतिहासिक कदम उठाया है। अब राज्य के सभी सरकारी कर्मचारियों के खिलाफ चल रही किसी भी प्रकार की विभागीय जांच, सतर्कता जांच या अनुशासनात्मक कार्रवाई की पूरी जानकारी 'मानव संपदा पोर्टल' पर ऑनलाइन दर्ज की जाएगी। इस पहल के तहत कर्मचारियों के करियर रिकॉर्ड और उनके खिलाफ चल रही जांच की स्थिति अब ऑनलाइन उपलब्ध होगी, जिससे प्रमोशन, ट्रांसफर या अन्य प्रशासनिक निर्णयों में वास्तविक स्थिति तुरंत देखने में सक्षम होंगे।

शासनादेश के अनुसार, जिन कर्मचारियों के खिलाफ विभागीय कार्रवाई या सतर्कता जांच चल रही है, उनकी पूरी जानकारी उनके ऑनलाइन सर्विस बुक में दर्ज की जाएगी। अब तक कई मामलों में जांच की फाइलें कार्यालयों में दबी रहती थीं और उच्चाधिकारियों को सही स्थिति का पता नहीं चल पाता था। नए निर्देशों के लागू होने के बाद यह प्रक्रिया पूरी तरह पारदर्शी होगी और किसी भी कर्मचारी के करियर पर होने वाली कार्रवाई का पूरा लेखा-जोखा उपलब्ध रहेगा।

मानव संपदा पोर्टल पर कर्मचारियों की प्रोफाइल में एक विशेष कॉलम जोड़ा गया है। इसमें यदि किसी कर्मचारी के खिलाफ जांच लंबित है तो 'हाँ' और यदि कोई जांच नहीं है तो 'नहीं' दर्ज किया जाएगा। इस प्रक्रिया को सभी ऑफिस एडमिन आईडी के माध्यम से पूरा किया जाएगा, जिससे डेटा का भरोसेमंद और प्रमाणिक रिकॉर्ड तैयार होगा। इससे कर्मचारियों के प्रमोशन या ट्रांसफर के समय किसी भी स्तर पर गलती या विलंब की संभावना समाप्त हो जाएगी। प्रदेश के सभी रिपोर्टिंग कार्यालयों के नोडल ऑफिस एडमिन को निर्देश दिया गया है कि वे पोर्टल पर लॉगिन कर अपने अधीन कार्यरत सभी कर्मचारियों का डेटा अपडेट करें। इसके लिए एक विशेष प्रारूप (Format) भी उपलब्ध कराया गया है, जिसे इस्तेमाल कर विभागीय कार्रवाई की वर्तमान स्थिति दर्ज की जाएगी। अधिकारियों को यह सुनिश्चित करना होगा कि सभी डेटा सटीक, ताजा और प्रमाणिक हो।

मुख्य सचिव एम. देवराज ने स्पष्ट किया है कि इस आदेश का कड़ाई से पालन किया जाएगा। यदि कोई ऑफिस एडमिन या नोडल अधिकारी डेटा अपडेट नहीं करता या गलत जानकारी दर्ज करता है, तो उसकी जवाबदेही तय होगी और इसके लिए विभागीय कार्रवाई की जाएगी। इससे न केवल प्रशासनिक जवाबदेही बढ़ेगी, बल्कि सरकारी कर्मचारियों के करियर रिकॉर्ड की पारदर्शिता भी सुनिश्चित होगी। विशेषज्ञों का मानना है कि यह पहल उत्तर प्रदेश में प्रशासनिक सुधार और सरकारी सेवाओं में पारदर्शिता के लिए मील का पत्थर साबित होगी। अब उच्चाधिकारियों को किसी फाइल या दस्तावेज़ की प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ेगी। एक क्लिक पर किसी भी कर्मचारी के खिलाफ चल रही जांच, विभागीय कार्रवाई या सतर्कता मामले की पूरी जानकारी उपलब्ध होगी। इससे प्रशासनिक निर्णय लेने में समय की बचत होगी और कर्मचारियों के करियर से जुड़े सभी निर्णय अधिक निष्पक्ष और सटीक होंगे।

सरकारी कर्मचारियों और अधिकारियों के लिए यह नई व्यवस्था उनके करियर और प्रशासनिक जिम्मेदारी के दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जा रही है। इससे न केवल भ्रष्टाचार और मनमानी की संभावना कम होगी, बल्कि कर्मचारियों के प्रति प्रशासनिक पारदर्शिता और जवाबदेही को भी मजबूती मिलेगी। मानव संपदा पोर्टल पर अब हर कर्मचारी की ऑनलाइन सर्विस बुक में दर्ज जानकारी उनके करियर की पुख्ता रिकॉर्डिंग सुनिश्चित करेगी और भविष्य में किसी भी विवाद या जांच के समय सटीक प्रमाण उपलब्ध होगा। यह पहल उत्तर प्रदेश सरकार की डिजिटलीकरण और प्रशासनिक सुधार की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जो आने वाले वर्षों में पूरे राज्य के सरकारी कामकाज को और अधिक पारदर्शी और जवाबदेह बनाने में मददगार साबित होगी।

मास्टरस्ट्रोक: महिला आरक्षण संशोधन विधेयक को कैबिनेट की मंजूरी, लोकसभा में बढ़ेंगी 273 महिला सांसद

नई दिल्ली। भारतीय राजनीति में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ाने की दिशा में आज एक ऐतिहासिक कदम उठाया गया है। केंद्र सरकार ने महिला आरक्षण कानून में संशोधन का मसौदा कैबिनेट की मंजूरी के लिए प्रस्तुत किया और इसे मंजूरी दे दी गई। इसके तहत लोकसभा की सीटें बढ़ाकर 816 करने और उनमें 33 प्रतिशत यानी 273 सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित करने की तैयारी की जा रही है। यह व्यवस्था 2029 के आम चुनाव से लागू करने का लक्ष्य रखा गया है। इस महत्वपूर्ण प्रस्ताव को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में हुई कैबिनेट बैठक में मंजूरी मिली, और इसे संसद के आगामी सत्र में पेश करने की योजना बनाई गई है।

इस संशोधन के तहत अब तक की लोकसभा की 543 सीटों को बढ़ाकर 816 किया जाएगा, और इनमें 273 सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित होंगी। इसके साथ ही अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लिए भी आरक्षण का प्रावधान रखा गया है। यह पूरा ढांचा महिलाओं को संसद में अधिक प्रतिनिधित्व दिलाने और उन्हें वास्तविक राजनीतिक सशक्तिकरण देने के उद्देश्य से तैयार किया गया है।

पहले कानून में देरी की आशंका थी। 2023

में महिला आरक्षण कानून पारित हुआ था, लेकिन इसे लागू करने के लिए 2027 की जनगणना और उसके बाद परिसीमन की आवश्यकता थी। इससे यह कानून 2034 तक टल सकता था। सरकार ने इसे तेज करने के लिए 2011 की जनगणना के आधार पर परिसीमन कराने का फैसला किया है, जिससे महिलाओं के लिए आरक्षित सीटों की प्रक्रिया जल्दी शुरू हो सकेगी।

यह व्यवस्था केवल लोकसभा तक सीमित नहीं रहेगी। राज्यों की विधानसभाओं में भी इसी तरह सीटों का आरक्षण किया जाएगा। प्रत्येक राज्य में उसकी जनसंख्या के अनुपात के अनुसार महिलाओं को सीटें दी जाएंगी। इससे राज्यों में भी महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी बढ़ेगी और नीति निर्माण में उनका प्रभावी योगदान सुनिश्चित होगा।

सरकार की योजना है कि यह नया कानून 31 मार्च 2029 से लागू हो जाएगा। इसके बाद होने वाले लोकसभा और कुछ राज्य विधानसभा चुनावों में महिलाएं आरक्षित सीटों का लाभ उठाएंगी। इसमें ओडिशा, आंध्र प्रदेश, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश समेत कई राज्यों को शामिल किया गया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हाल ही में कहा था कि यह कदम महिलाओं के सशक्तिकरण से जुड़ा है और सभी राजनीतिक दलों को इसे बिना किसी राजनीतिक विरोधाभास के समर्थन देना चाहिए। उन्होंने सभी पार्टियों से अपील की कि वे देश की माताओं और बहनों का भरोसा जीतने के लिए इस ऐतिहासिक कानून का समर्थन करें।

विशेषज्ञों के अनुसार, यह कानून न केवल संसद और विधानसभा में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाएगा, बल्कि सामाजिक और आर्थिक स्तर पर भी महिलाओं की स्थिति सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। राजनीति में महिलाओं की अधिक भागीदारी से निर्णय प्रक्रिया में संतुलन आएगा, नीति निर्माण में विविध दृष्टिकोण शामिल होंगे और देश की लोकतांत्रिक संस्थाओं में सुधार की दिशा में यह एक बड़ा कदम साबित होगा।

इस ऐतिहासिक फैसले के बाद अब संसद के सत्र में पेश होने वाले बिल की चर्चा में सभी दलों की राजनीतिक सक्रियता बढ़ जाएगी। आगामी चुनावों में महिलाओं की भागीदारी और उनकी शक्ति में वृद्धि इस कानून के लागू होने के साथ ही दिखाई देगी। यह कदम भारतीय लोकतंत्र में नारी शक्ति को नई उड़ान देगा और महिलाओं के राजनीतिक अधिकारों की दिशा में एक मजबूत मिसाल कायम करेगा।

सुप्रीम कोर्ट ने धर्म में अंधविश्वास तय करने का अधिकार अपने पास रखा, सबरीमाला मामले की सुनवाई में अहम टिप्पणी

नई दिल्ली। देश में धार्मिक प्रथाओं और अंधविश्वास के बीच संतुलन बनाने के मुद्दे पर सुप्रीम कोर्ट ने एक महत्वपूर्ण टिप्पणी की है। सबरीमाला मंदिर में महिलाओं के प्रवेश से जुड़े 2018 के ऐतिहासिक फैसले के बाद सुप्रीम कोर्ट अब यह तय कर रहा है कि धर्म के भीतर कौन सी प्रथा अंधविश्वास के दायरे में आती है और इसे तय करने का अधिकार किसके पास है। बुधवार को नौ-न्यायाधीशों की संविधान पीठ के समक्ष हुई सुनवाई के दौरान कोर्ट ने स्पष्ट किया कि किसी धर्म में कौन सी प्रथा अंधविश्वास है, यह तय करने का अधिकार और अधिकार क्षेत्र अदालत के पास है, न कि केवल विधायिका या धार्मिक संस्थाओं के पास।

सुनवाई के दौरान केंद्र सरकार की दलील पर विचार करते हुए सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने यह तर्क प्रस्तुत किया कि एक धर्मनिरपेक्ष अदालत इस मामले में निर्णय नहीं कर सकती, क्योंकि न्यायाधीश कानून के विशेषज्ञ होते हैं, धर्म के नहीं। मेहता ने यह भी कहा कि यदि कोई प्रथा अंधविश्वास मानी जाती है, तो इसे तय करना और उसके सुधार का कार्य संविधान के अनुच्छेद 25(2)(बी) के तहत विधायिका का है। उन्होंने उदाहरण देते हुए बताया कि जादू-टोना, तंत्र-मंत्र और अन्य ऐसी प्रथाओं के खिलाफ कई कानून बनाए गए हैं, जिनके जरिए विधायिका ने इसे नियंत्रित किया है और समाज में जागरूकता बढ़ाई है।

सुप्रीम कोर्ट ने इस दलील के जवाब में कहा कि केवल विधायिका के पास निर्णय का अधिकार होना पर्याप्त नहीं है। धर्म के भीतर अंधविश्वास और प्रथाओं के दायरे का आकलन करना न्यायिक समीक्षा का हिस्सा है और अदालत इसे समाज में धार्मिक अधिकारों और संवैधानिक मूल्यों के बीच संतुलन बनाए रखने के लिए करती है। कोर्ट ने यह भी संकेत दिया कि धार्मिक प्रथाओं के नाम पर महिलाओं और अन्य वर्गों के अधिकारों का हनन नहीं होना चाहिए, और यह सुनिश्चित करना न्यायपालिका का कर्तव्य है कि अंधविश्वास के नाम पर किसी के संवैधानिक अधिकारों का उल्लंघन न हो।

इस मुद्दे पर चर्चा करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने यह कहा कि धर्म के भीतर प्रथाओं और अंधविश्वास को अलग करने की जिम्मेदारी अदालत की है, क्योंकि समाज में अंधविश्वास के चलते कई बार मानवाधिकार और लैंगिक समानता का हनन होता रहा है। अदालत ने यह भी रेखांकित किया कि किसी धर्म में प्रथाओं का अनुकरण करना और उसे अंधविश्वास मानना दो अलग-अलग पहलू हैं। उदाहरण के लिए, कुछ धार्मिक आयोजनों में किए जाने वाले अनुष्ठान परंपरागत तो हो सकते हैं, लेकिन यदि उनमें किसी वर्ग या लिंग के अधिकारों का हनन हो रहा है, तो उसे अंधविश्वास के दायरे में रखा जा सकता है।

विशेषज्ञों के अनुसार यह फैसला भारतीय समाज और धर्म के बीच न्याय का नया मापदंड तय कर सकता है। अदालत द्वारा अंधविश्वास और धार्मिक प्रथाओं को अलग करने के अधिकार की पुष्टि करने से न केवल धार्मिक स्वतंत्रता और संविधान की सुरक्षा सुनिश्चित होगी, बल्कि समाज में जागरूकता और महिलाओं के अधिकारों की रक्षा भी मजबूत होगी। सुप्रीम कोर्ट के इस रुख से यह स्पष्ट संकेत मिल रहा है कि धार्मिक अधिकारों और नागरिक अधिकारों के बीच संतुलन बनाना न्यायपालिका की प्राथमिक जिम्मेदारी है। सुनवाई में यह भी चर्चा हुई कि भारत में कई धार्मिक प्रथाओं को अंधविश्वास के दायरे में लाया गया है। इनमें जादू-टोना, तंत्र-मंत्र, अवैध अनुष्ठान, या ऐसे रीति-रिवाज शामिल हैं, जो समाज में भय और भ्रम फैलाते हैं। न्यायालय ने यह उल्लेख किया कि धार्मिक स्वतंत्रता का मतलब अंधविश्वास को फैलाने का अधिकार नहीं है। इसलिए, अदालत को यह सुनिश्चित करना है कि कोई भी प्रथा या अनुष्ठान अंधविश्वास के दायरे में आता है या नहीं, और यदि आता है तो उसके सामाजिक और कानूनी प्रभावों का मूल्यांकन किया जाए।

इस सुनवाई में यह भी रेखांकित किया गया कि अदालत का यह अधिकार सिर्फ सबरीमाला मामले तक सीमित नहीं है। यह व्यापक रूप में भारत के सभी धार्मिक संस्थाओं और प्रथाओं पर लागू होगा। कोर्ट ने कहा कि समाज में प्रचलित अंधविश्वास और धार्मिक प्रथाओं की समीक्षा करना, उनका सामाजिक प्रभाव देखना और न्यायिक संतुलन बनाए रखना न्यायपालिका की जिम्मेदारी है। इससे यह सुनिश्चित होगा कि धार्मिक स्वतंत्रता का उपयोग समाज में असमानता, भेदभाव या हिंसा फैलाने के लिए न किया जाए।

अदालत की इस टिप्पणियों से यह स्पष्ट हो गया है कि भविष्य में धर्म और अंधविश्वास के बीच की रेखा न्यायपालिका तय करेगी। यह फैसला न केवल सबरीमाला मंदिर से जुड़ी महिलाओं के अधिकारों के लिए अहम है, बल्कि यह पूरे देश में धार्मिक प्रथाओं, सामाजिक न्याय और संवैधानिक अधिकारों के बीच संतुलन बनाए रखने में भी मील का पत्थर साबित होगा। सुप्रीम कोर्ट की इस दिशा-निर्देश से उम्मीद की जा रही है कि भविष्य में अंधविश्वास के नाम पर होने वाले सामाजिक और लैंगिक भेदभाव को नियंत्रित करने में सहायता मिलेगी। यह निर्णय धर्म के भीतर प्रथाओं के कानूनी मूल्यांकन और उनकी समीक्षा के लिए एक नया मार्ग प्रशस्त करेगा, जिससे भारतीय समाज में कानून और धर्म के बीच संतुलन सुनिश्चित होगा।

शांति की नई सुबह: अमेरिका-ईरान 14 दिन के संघर्षविराम पर सहमत, मध्यस्थ चीन और पाकिस्तान

तेहरान/वाशिंगटन। बुधवार की सुबह मिडिल ईस्ट और पूरी दुनिया के लिए किसी राहत की सांस के समान थी। पिछले 40 दिनों से जारी अमेरिका-ईरान और इजरायल के बीच खतरनाक जंग के बाद दोनों पक्ष 14 दिनों के लिए संघर्षविराम पर सहमत हो गए हैं। इस फैसले ने मिडिल ईस्ट में फंसे लाखों लोगों के दिलों से भय की परत हटाई और उन्हें राहत का एहसास कराया। इन 40 दिनों के दौरान मिसाइल और ड्रोन हमलों के डर ने सामान्य जीवन को अस्त-व्यस्त कर दिया था। स्कूल, ऑफिस और सार्वजनिक स्थानों में लोगों को लगातार बंकरों में सुरक्षित रहने के लिए मजबूर होना पड़ा। तेल रिफाइनरियों पर हमलों के कारण वैश्विक ऊर्जा संकट बढ़ गया था और भारत सहित कई देशों में एलपीजी और पेट्रोल की किल्लत ने आम लोगों की परेशानियों को बढ़ा दिया था। जंग के पहले हफ्तों में ईरान और इजरायल ने एक-दूसरे पर सैकड़ों मिसाइल और ड्रोन दागे। ईरान ने सऊदी अरब, कतर, बहरीन और यूएई की तेल रिफाइनरियों और शहरों को निशाना बनाया। दुबई में बुर्ज खलीफा के पास तक मिसाइल पहुंच गई और नागरिकों में भय का माहौल बन गया। वहीं अमेरिका और इजरायल ने भी ईरान पर लगातार हवाई और मिसाइल हमले किए। इस हिंसक संघर्ष में ईरान में 1,900 से ज्यादा लोग मारे गए, लेबनान में 1,500 से अधिक मौतें हुईं, जबकि 13 अमेरिकी सैनिक भी जंग का शिकार हुए। मासूम बच्चे, महिलाएं और बुजुर्ग भी इस हिंसा का शिकार बने। इस स्थिति ने पूरी दुनिया में चिंता पैदा कर दी थी।

संघर्षविराम की घोषणा के बाद मिडिल ईस्ट का आकाश अब फिर से सुरक्षित है। इराक ने अपने एयरपोर्ट और एयरस्पेस को खोल दिया है, जिससे नागरिक और व्यापारी विमानों का आवागमन सुचारू रूप से शुरू हो सकेगा। ईरान ने होर्मुज स्ट्रेट से जहाजों की सुरक्षित आवागमन की इजाजत दी है, जो विश्व तेल बाजार के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस मार्ग से दुनिया का लगभग 20 प्रतिशत कच्चा तेल गुजरता है, और ईरान अपनी 90 प्रतिशत तेल की आपूर्ति इसी रास्ते से करता है।

संघर्षविराम की प्रक्रिया में मध्यस्थ के रूप में चीन और पाकिस्तान ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने कहा कि अमेरिका और ईरान ने इस्लामाबाद में वार्ता के लिए अपनी सहमति दी है और दोनों पक्ष आमने-सामने बैठकर सभी बिंदुओं पर मंथन करेंगे। यह बैठक युद्ध के स्थायी समाधान की दिशा में पहला कदम मानी जा रही है।

इस संघर्षविराम ने वैश्विक ऊर्जा संकट को भी कुछ हद तक कम किया है। भारत समेत कई देशों में एलपीजी सिलेंडरों और तेल के भंडार को लेकर लोगों में जो डर बैठा था, अब धीरे-धीरे कम होने लगा है। युद्ध के कारण अंतरराष्ट्रीय बाजार में तेल और गैस की कीमतें बढ़ रही थीं, जिससे देश में महंगाई का दबाव बन गया था। अब शांति के संकेत मिलने के बाद तेल कंपनियों पर कीमतों को स्थिर करने का दबाव कम हो गया है और भारतीय रुपया डॉलर के मुकाबले मजबूती की ओर बढ़ रहा है।

जंग की इस 40-दिवसीय अवधि में ईरान और इजरायल के नागरिकों ने अपने जीवन की सुरक्षा के लिए कई बार बंकरों में घंटों बिताए। स्कूल, अस्पताल, बाजार और सड़कें वीरान हो गईं। अब 14 दिन के संघर्षविराम के साथ नागरिकों को बंकरों में घंटों बिताने की जरूरत नहीं होगी और सामान्य जीवन की तरफ लौटने की उम्मीद बढ़ी है।

हालांकि, विशेषज्ञों का कहना है कि यह संघर्षविराम अस्थायी है और इसके स्थायी रूप में बदलने के लिए अब भी कड़ी कूटनीतिक बातचीत की आवश्यकता होगी। अमेरिका और ईरान के बीच कई संवेदनशील मुद्दे अब भी बाकी हैं, जिनमें परमाणु संवर्धन, आर्थिक प्रतिबंध और क्षेत्रीय सुरक्षा शामिल हैं। दोनों पक्षों को अपने बिंदुओं पर सहमति बनाने और शांति सुनिश्चित करने के लिए गंभीरता से वार्ता करनी होगी। इस संघर्षविराम ने मिडिल ईस्ट में सुरक्षा की नई सुबह लाने का संकेत दिया है। भारत, चीन और पाकिस्तान समेत सभी प्रभावित देशों ने इस फैसले का स्वागत किया है। अब सवाल यह है कि क्या यह 14-दिवसीय संघर्षविराम स्थायी रूप लेगा और क्षेत्र में शांति कायम हो पाएगी। फिलहाल, मिडिल ईस्ट के नागरिकों के लिए यह राहत और शांति की पहली किरण है, जो उन्हें भय और आतंक से कुछ समय के लिए मुक्त करती है।

नवसर्जन संस्कृति
हिन्दी

JioTV
CHENNAL NO.
2063

Jio Air Fiber
Jio Tv +
Jio Fiber
Daily Hunt
ebaba Tv
Dish Plus
DTH live OTT
Rock TV
Airtel
Amezone Fire
Rocu Tv-US.UK

देश-दुनिया के नवीनतम समाचार
प्राप्त करने के लिए आज ही
नवसर्जन संस्कृति हिंदी चेनल देखिये

बिहार राजनीति में ऐतिहासिक बदलाव: नीतीश कुमार का केंद्र की ओर रुख, 'नीतीश युग' का अंत नजदीक

(जीएनएस)। पटना। बिहार की राजनीति दो दशकों से एक ही नेतृत्व के नाम रही है, लेकिन अब वह दौर अपने अंत की ओर बढ़ रहा है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, जिनकी राजनीतिक छवि और प्रशासनिक पकड़ बिहार में वर्षों से अटल रही है, जल्द ही राज्य की राजनीति को अलविदा कहकर राष्ट्रीय स्तर पर सक्रिय भूमिका निभाने के लिए तैयार हैं। उनके दिल्ली रुख की खबरों ने न केवल राज्य की राजनीतिक गलियारियों में हलचल पैदा की है, बल्कि पूरे देश में सियासी चर्चा का केंद्र बन गई है। सूत्रों के मुताबिक, नीतीश कुमार 9 अप्रैल को दोपहर 3:20 बजे पटना से दिल्ली के लिए उड़ान भरेंगे। 10 अप्रैल को वे राज्यसभा सदस्य के रूप में शपथ ग्रहण करेंगे, जिससे उनके राष्ट्रीय राजनीति में प्रवेश का औपचारिक चरण शुरू होगा। यह कदम उनके केंद्रीय स्तर पर सक्रिय राजनीति में आने का संकेत माना जा रहा है। उनके इस निर्णय के साथ ही बिहार में दो दशक से चले आ रहे 'नीतीश युग' का अंत निश्चित प्रतीत हो रहा है।

पटना लौटने की संभावना 12 अप्रैल जताई जा रही है। इसके बाद, 13 अप्रैल को मुख्यमंत्री अपनी कैबिनेट की अंतिम बैठक कर सकते हैं। इस बैठक में वे ऐसे प्रशासनिक और लोक-लुभावन फैसले ले सकते हैं, जो उनके कार्यकाल की अंतिम छाप छोड़ें। इस बैठक में शिक्षा, स्वास्थ्य, और विकास योजनाओं से जुड़े बड़े निर्णय भी लिए जा सकते हैं, ताकि जनता के सामने उनके शासन की अंतिम उपलब्धियां सामने आएं।

14 अप्रैल को नीतीश कुमार के राज्यपाल से मिलने और अपना इस्तीफा सौंपने की संभावना है। इसके अगले ही दिन यानी 15 अप्रैल को बिहार में नई एनडीए सरकार का शपथ ग्रहण होने की संभावना है। इस शपथ ग्रहण समारोह के साथ ही राज्य की सत्ता का स्वरूप बदल जाएगा और नई सरकार के साथ एक नया राजनीतिक अध्याय शुरू होगा।

बिहार के अगले मुख्यमंत्री का नाम अभी राजनीतिक चर्चा का प्रमुख विषय बना हुआ है। वर्तमान उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी का नाम सबसे आगे चल रहा है, लेकिन भाजपा नेतृत्व किसी अप्रत्याशित नाम को आगे लाकर राजनीतिक चौंकाने की रणनीति भी रख सकता है। 10 अप्रैल को दिल्ली में होने वाली बीजेपी कोर कमेटी की बैठक में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह की मौजूदगी में इस पर अंतिम मुहर लगाई जाएगी।

नीतीश कुमार के इस्तीफे के बाद एनडीए विधानमंडल दल की संयुक्त बैठक होगी। इस बैठक में सभी घटक दल मिलकर नए नेता का चुनाव करेंगे। इसके बाद ही राज्यपाल के सामने नई सरकार बनाने का औपचारिक दावा प्रस्तुत किया जाएगा। उल्लेखनीय है कि नीतीश कुमार ने पहले ही 30 मार्च को विधान परिषद की सदस्यता छोड़ दी थी, जिससे उनकी दिल्ली यात्रा और राष्ट्रीय राजनीति में सक्रिय होने का मार्ग साफ हो गया था।

नीतीश कुमार का केंद्रीय स्तर पर जाने का फैसला न केवल बिहार के राजनीतिक समीकरण बदल देगा, बल्कि पूरे देश में बीजेपी और उनके घटक दलों की रणनीति पर भी असर डालेगा। राज्य में नए मुख्यमंत्री के चयन के साथ ही नीति निर्माण, विकास योजनाओं और प्रशासनिक कार्यों में नई गति देखने को मिल सकती है। बिहार के राजनीतिक विश्लेषक यह मान रहे हैं कि नए नेतृत्व के साथ राज्य में शासन संचालन का तरीका बदल सकता है और नई योजनाओं पर तेजी से काम हो सकता है।

राजनीतिक हलकों में यह भी चर्चा है कि नीतीश कुमार का राष्ट्रीय स्तर पर सक्रिय होना बीजेपी और उनके सहयोगी दलों के लिए रणनीतिक लाभ भी ला सकता है। केंद्र और राज्य के बीच बेहतर समन्वय, विकास परियोजनाओं की गति, और राष्ट्रीय मुद्दों पर बिहार की भूमिका में भी बदलाव देखने को मिल सकता है।

नीतीश कुमार का निर्णय और इसके साथ ही 'नीतीश युग' का समापन बिहार की राजनीति में एक ऐतिहासिक मोड़ साबित होगा। इस बदलाव के साथ ही राज्य में नई उम्मीदें, नई योजनाएं और राजनीतिक समीकरण देखने को मिलेंगे। आगामी दिनों में यह स्पष्ट होगा कि बिहार की राजनीति नई सरकार और नए मुख्यमंत्री के नेतृत्व में किस दिशा में आगे बढ़ती है और प्रदेश की जनता को किस तरह के बदलाव का लाभ मिलता है।

बिहार की जनता और राजनीतिक पर्यवेक्षक अब 14 और 15 अप्रैल की घटनाओं पर नजरें टिकी हुई हैं, जब राज्य में सत्ता का हस्तांतरण होगा और 'नीतीश युग' का समापन होगा। इस ऐतिहासिक बदलाव से न केवल बिहार की राजनीति, बल्कि पूरे राष्ट्रीय राजनीतिक परिदृश्य पर असर पड़ेगा।

"अमंगल दोष" से ग्रसित हुआ बिहार का स्वास्थ्य तंत्र, तेजस्वी का सरकार पर तीखा हमला

(जीएनएस)। पटना। बिहार की स्वास्थ्य व्यवस्था एक बार फिर सियासी बहस के केंद्र में आ गई है। नेता प्रतिपक्ष Tejashwi Yadav ने राज्य की मौजूदा स्वास्थ्य सेवाओं पर तीखा प्रहार करते हुए इसे "अमंगल दोष" से ग्रसित करार दिया है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म X पर किए गए अपने विस्तृत पोस्ट में उन्होंने न केवल स्वास्थ्य विभाग की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाए, बल्कि सीधे तौर पर सरकार और स्वास्थ्य मंत्री Mangal Pandey को निशाने पर लिया। यह बयान ऐसे समय आया है जब राज्य के विभिन्न हिस्सों से अस्पतालों में बदहाल व्यवस्थाओं की खबरें लगातार सामने आ रही हैं और आम जनता स्वास्थ्य सुविधाओं को लेकर परेशान नजर आ रही है। तेजस्वी यादव ने अपने बयान में कहा कि बिहार के सरकारी अस्पतालों की स्थिति बेहद चिंताजनक हो चुकी है। उन्होंने आरोप लगाया कि कहीं डॉक्टरों की भारी कमी है, तो कहीं दवाएं उपलब्ध नहीं हैं। कई अस्पतालों में तो बुनियादी चिकित्सा उपकरणों तक का अभाव है। उन्होंने कहा कि हालात इतने खराब हैं कि मरीजों के इलाज के लिए जरूरी चीजें—जैसे सुई, रूई, बेड—भी समय पर नहीं मिल पातीं। यह स्थिति केवल ग्रामीण क्षेत्रों तक सीमित नहीं है, बल्कि कई जिला मुख्यालयों और बड़े अस्पतालों में भी यही हाल देखने को मिल रहा है।

उन्होंने बेहद मार्मिक तरीके से यह भी बताया कि मरीजों को अस्पताल तक पहुंचाने के लिए परिजन किन कठिन परिस्थितियों से गुजरते हैं। एंबुलेंस और व्हीलचेयर जैसी बुनियादी सुविधाओं के अभाव में लोग अपने बीमार परिजनों को साइकिल, ठेला, चारपाई या यहां तक कि स्कूटर पर लादकर अस्पताल लाने को मजबूर हैं। यह दृश्य न केवल स्वास्थ्य व्यवस्था की सच्चाई को उजागर करता है, बल्कि सरकार के दावों पर भी गंभीर सवाल खड़े करता है।

सरकार पर सीधा हमला बोलते हुए तेजस्वी यादव ने कहा कि भाजपा-जदयू की सरकार ने पूरे स्वास्थ्य तंत्र को चौपट कर दिया है। उन्होंने कहा कि केवल अस्पतालों की इमारतें खड़ी कर देना और उन्हें मेडिकल कॉलेज घोषित कर देना पर्याप्त नहीं है। जब तक वहां पर्याप्त संख्या में डॉक्टर, नर्स और तकनीकी स्टाफ मौजूद नहीं होंगे, तब तक ये इमारतें केवल दिखावे का प्रतीक बनी रहेंगी। उन्होंने इसे "दिखावटी विकास" बताते हुए कहा कि सरकार जमीनी हकीकत से दूर केवल आंकड़ों और घोषणाओं के जरिए अपनी छवि चमकाने में लगी हुई है।

अपने आरोपों को और गंभीर बनाते हुए उन्होंने कमीशनखोरी का मुद्दा भी उठाया। तेजस्वी यादव ने कहा कि अस्पतालों की नई-नई इमारतें बनाने के पीछे असल मकसद जनता को बेहतर स्वास्थ्य सुविधा देना नहीं, बल्कि ठेके और निर्माण कार्यों के जरिए कमीशन हासिल करना है। उन्होंने कटाक्ष करते हुए कहा कि अगर अस्पतालों में डॉक्टर और स्टाफ नहीं होंगे, तो ये इमारतें खाली पड़ी रहेंगी और वहां मरीजों की जगह कबूतर दिखाई देंगे। यह बयान राजनीतिक रूप से बेहद तीखा माना जा रहा है और इससे सरकार पर दबाव बढ़ सकता है।

तेजस्वी यादव ने अपने 17 महीने के कार्यकाल का भी जिक्र किया और दावा किया कि उस दौरान स्वास्थ्य विभाग में कई सुधारात्मक कदम उठाए गए थे। उन्होंने कहा कि उनके कार्यकाल में डॉक्टरों की नियुक्ति, दवाओं की उपलब्धता और अस्पतालों की व्यवस्थाओं को बेहतर बनाने की दिशा में काम हुआ था। लेकिन वर्तमान सरकार ने उन योजनाओं को आगे नहीं बढ़ाया, जिससे स्थिति फिर से खराब हो गई।

उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि मौजूदा सरकार ने स्वास्थ्य सेवाओं को दलालों और माफियाओं के हवाले कर दिया है, जिससे आम जनता को भारी नुकसान उठाना पड़ रहा है।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि तेजस्वी यादव का यह बयान केवल आलोचना तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आगामी चुनावों को ध्यान में रखते हुए एक रणनीतिक हमला भी है। स्वास्थ्य जैसे संवेदनशील मुद्दे को उठाकर वे सीधे आम जनता की समस्याओं से जुड़ने की कोशिश कर रहे हैं। वहीं, सरकार के लिए यह एक चुनौती बन सकता है, क्योंकि स्वास्थ्य सेवाओं की खराब स्थिति का मुद्दा जनता के बीच गहराई से प्रभाव डालता है।

इस पूरे घटनाक्रम के बाद अब निगाहें सरकार की प्रतिक्रिया पर टिकी हुई हैं। क्या सरकार इन आरोपों का ठोस जवाब देगी या स्वास्थ्य व्यवस्था में सुधार के लिए कोई बड़ा कदम उठाएगी, यह आने वाले दिनों में स्पष्ट होगा। लेकिन इतना तय है कि बिहार की स्वास्थ्य व्यवस्था एक बार फिर सियासी बहस के केंद्र में आ चुकी है और यह मुद्दा आगे भी राजनीतिक तापमान को बढ़ाता रहेगा।

आजमगढ़ की राजनीति की शिखर नेता मोहसिना किदवई का निधन, 94 वर्ष की उम्र में अंतिम सांस

(जीएनएस)। आजमगढ़/नई दिल्ली। भारतीय राजनीति की एक प्रभावशाली और निडर नेता, कांग्रेस की वरिष्ठ नेता और पूर्व केंद्रीय मंत्री मोहसिना किदवई का मंगलवार की सुबह दिल्ली में निधन हो गया। 94 वर्षों के अपने लंबे और समर्पित जीवन में उन्होंने राजनीति, सामाजिक सेवा और महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनके निधन की खबर ने न केवल आजमगढ़ बल्कि पूरे देश में राजनीतिक और सामाजिक जगत में शोक की लहर फैला दी।

मोहसिना किदवई का जन्म 1 जनवरी 1932 को हुआ था। राजनीति में उनका सफर लंबे समय तक सक्रिय और संघर्षपूर्ण रहा। उन्होंने न केवल कांग्रेस पार्टी के संगठनात्मक ढांचे में महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां निभाई, बल्कि केंद्रीय मंत्री के रूप में कई महत्वपूर्ण पदों पर काम किया। उनके करियर की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धियों में से एक थी वर्ष 1978 में आजमगढ़ लोकसभा सीट से चुनाव जीतना। इस जीत ने उन्हें इस क्षेत्र से निर्वाचित होने वाली पहली महिला सांसद के रूप में इतिहास में दर्ज करा दिया। उस समय उन्होंने लगभग 35,000 मतों के अंतर से जीत दर्ज की, जिसने राजनीतिक विश्लेषकों को भी चौंका दिया।

उनकी राजनीतिक यात्रा और उपलब्धियों को समझने के लिए यह महत्वपूर्ण है कि मोहसिना किदवई मूल रूप से आजमगढ़ की निवासी नहीं थीं। उनका परिवारिक और सामाजिक संबंध बाराबंकी से था। बावजूद इसके, उन्होंने आजमगढ़ में अपना प्रभाव स्थापित किया और स्थानीय मतदाताओं का विश्वास जीतकर लोकसभा में प्रतिनिधित्व किया। उस समय प्रदेश और केंद्र दोनों जगह जनता पार्टी की सरकार थी, लेकिन मतदाताओं ने अपने विवेक और मोहसिना किदवई की काबिलियत को देखते हुए उन्हें समर्थन दिया। यह उनके नेतृत्व और जनभावना को समझने की क्षमता का परिचायक था। किदवई का राजनीतिक सफर केवल चुनाव जीतने तक सीमित नहीं रहा। उन्होंने कांग्रेस पार्टी के विभिन्न संगठनात्मक कार्यों में सक्रिय योगदान दिया। पार्टी की नीतियों के निर्माण, महिला सशक्तिकरण और समाज कल्याण से जुड़े कार्यक्रमों में उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता था। गांधी परिवार से उनके घनिष्ठ संबंध भी उनकी राजनीतिक और सामाजिक पहचान को मजबूती देते थे। उन्हें पार्टी के भीतर और बाहर सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था।

उनकी उपलब्धियों में सामाजिक और महिला कल्याण कार्य भी प्रमुख थे। उन्होंने हमेशा महिलाओं को राजनीति में सक्रिय भूमिका निभाने और समाज में समान अधिकार सुनिश्चित करने के लिए प्रेरित किया। उनके प्रयासों से न केवल आजमगढ़, बल्कि पूरे उत्तर प्रदेश में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी बढ़ी। उनके नेतृत्व और दूरदर्शिता ने कई युवा नेताओं को मार्गदर्शन और प्रेरणा दी।

मोहसिना किदवई की मौत से राजनीतिक जगत में शोक का माहौल है। उनके समर्थक और पार्टी के साथी उनके योगदान को याद कर रहे हैं और उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं। आजमगढ़ के स्थानीय नेताओं ने भी उन्हें एक समर्पित, निडर और जनप्रिय नेता के रूप में याद किया। कहा जा रहा है कि उनका निधन केवल कांग्रेस पार्टी के लिए ही नहीं, बल्कि पूरे देश के लिए एक अपूरणीय क्षति है। उनकी विरासत उनके नेतृत्व, सेवा भावना और महिलाओं के प्रति उनके संघर्ष में जीवित रहेगी। उनके योगदान से यह स्पष्ट होता है कि राजनीतिक जीवन में एक मजबूत दृष्टिकोण, समाज सेवा और जनसंवाद से कैसे किसी नेता को न केवल क्षेत्रीय बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर भी पहचान और सम्मान मिल सकता है। मोहसिना किदवई का जीवन और उपलब्धियां आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा स्रोत बनी रहेंगी। आजमगढ़ और पूरे देश के लोग उन्हें उनके साहस, दूरदर्शिता और राजनीतिक कर्तृत्व के लिए याद करेंगे। उनके निधन के बाद राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्र में उनकी कमी महसूस की जाएगी, लेकिन उनका योगदान भारतीय लोकतंत्र और महिला नेतृत्व के इतिहास में हमेशा अमिट रहेगा।

"जब एक गाय बनी परिवार की आत्मा: 24 सालों का रिश्ता, तीन पीढ़ियों का स्नेह और 'गोरी' की भावुक विदाई की अमर कहानी"

(जीएनएस)। मुकुंदपुर गांव की उस सुबह में कुछ अलग था हवा में एक अजीब सी खामोशी थी, जैसे पूरा गांव किसी अपने को खो देने के दुख में डूबा हो। यह कोई साधारण दिन नहीं था, बल्कि एक ऐसी विदाई का दिन था, जिसने इंसान और पशु के रिश्ते को एक नई ऊंचाई पर पहुंचा दिया। यह कहानी है 'गोरी' की—एक गाय, जो केवल पशु नहीं थी, बल्कि एक परिवार की धड़कन, उनकी यादों का आधार और तीन पीढ़ियों का पालन करने वाली मां थी।

करीब 24 वर्षों पहले जब गोरी इस परिवार में आई थी, तब किसी ने नहीं सोचा था कि वह एक दिन इस घर की आत्मा बन जाएगी। धीरे-धीरे उसने अपने स्नेह, अपनी उपस्थिति और अपने दूध के माध्यम से परिवार के हर सदस्य के जीवन में ऐसी जगह बना ली, जिसे शब्दों में बयां करना मुश्किल है। घर के आंगन में उसकी मौजूदगी किसी मंदिर की शांति जैसी थी—जहां हर दिन उसकी सेवा करना, उसे चारा खिलाना, उसके सिर पर हाथ फेरना, एक पूजा के समान बन गया था।

समय बीतता गया बच्चे बड़े होते गए, फिर उनके बच्चे भी इस दुनिया में आए, लेकिन एक चीज जो कभी नहीं बदली, वह थी गोरी का स्नेह। उसने लगभग डेढ़ दर्जन बछड़ों को जन्म दिया, जो आज अलग-अलग गांवों और रिश्तेदारों के घरों में पल-बढ़ रहे हैं। लेकिन हर एक के पीछे एक कहानी है—गोरी की ममता की कहानी। परिवार के सदस्य बताते हैं कि जब भी कोई बच्चा बीमार होता, तो सबसे पहले गोरी के पास जाकर उसका दूध दिया जाता, जैसे उसमें कोई दिव्य शक्ति हो।

अमित शर्मा जब यह बताते हैं कि उन्होंने, उनके पिता ने और अब उनके बच्चे भी उसी गोरी का दूध पीकर बड़े हुए हैं, तो उनकी आंखों में आंसू आ जाते हैं। वह कहते हैं, "गोरी सिर्फ गाय नहीं थी वो हमारी मां थी।" यह शब्द केवल भावना नहीं, बल्कि उस रिश्ते की गहराई को दर्शाते हैं, जो वर्षों में बना और अब एक याद बनकर रह गया।

फिर आया वह दिन जब गोरी ने इस दुनिया को अलविदा कह दिया। जैसे ही यह खबर गांव में फैली, पूरा माहौल शोक में डूब गया। लेकिन इस विदाई को केवल एक अंत नहीं बनने दिया गया, बल्कि इसे एक उत्सव की तरह मनाया गया—उस जीवन के सम्मान में, जिसने इतने वर्षों तक सबको दिया ही दिया।

गोरी की अंतिम यात्रा किसी इंसान की अंतिम यात्रा से कम नहीं थी। उसकी अर्थी को फूलों और रंग-बिरंगे गुब्बारों से सजाया गया। ढोल-नगाड़ों की आवाज गूंज रही थी, लेकिन उसमें खुशी नहीं, बल्कि सम्मान और भावनाओं का स्वर था। गांव के हर कोने से लोग बाहर आए, और जैसे ही यात्रा उनके दरवाजे से गुजरी, उन्होंने फूल बरसाकर अपनी श्रद्धांजलि दी।

यह दृश्य किसी फिल्म का नहीं, बल्कि सच्चाई का था—जहां इंसान और पशु के बीच का रिश्ता इतना गहरा हो सकता है कि उसकी विदाई भी एक पर्व बन जाए। छोटे बच्चे, बुजुर्ग, महिलाएं—हर किसी की आंखों में आंसू थे, लेकिन उन आंसुओं में एक गर्व भी था कि उन्होंने एक ऐसी आत्मा को अपने बीच जिया है।

देवेंद्र शर्मा के लिए यह केवल एक गाय का जाना नहीं था, बल्कि उनके जीवन का एक हिस्सा टूट जाना था। लेकिन उन्हें इस बात का सुकून है कि गोरी का वंश आज भी जीवित है, और उसकी यादें हमेशा उनके साथ रहेंगी। उन्होंने यह भी तय किया है कि गोरी की तेरहवीं पूरे विधि-विधान से की जाएगी, जैसे किसी परिवार के सदस्य की होती है।

मुकुंदपुर गांव की यह कहानी केवल एक घटना नहीं, बल्कि एक संदेश है—कि प्रेम और संवेदना की कोई सीमा नहीं होती। यह हमें सिखाती है कि जिन जीवों को हम अक्सर केवल उपयोग के नजरिए से देखते हैं, वे भी हमारे जीवन में उतनी ही गहराई से जुड़ सकते हैं, जितना कोई इंसान।

गोरी अब इस दुनिया में नहीं है, लेकिन उसकी कहानी, उसका स्नेह और उसकी यादें हमेशा जिंदा रहेंगी हर उस दिल में, जिसने उसे कभी देखा, महसूस किया या उसके बारे में सुना। यह विदाई एक अंत नहीं, बल्कि एक अमर कहानी की शुरुआत है—जिसे आने वाली पीढ़ियां भी सुनेंगी और महसूस करेंगी।

"चित्रकूट का रूपांतरण: आस्था की भूमि से रक्षा शक्ति के केंद्र तक, डिफेंस कॉरिडोर की ऐतिहासिक उड़ान"

(जीएनएस)। चित्रकूट यह नाम सुनते ही मन में एक ऐसी भूमि की छवि उभरती है, जहां आध्यात्मिकता बहती है, जहां हर कण में रामायण की गूंज सुनाई देती है, जहां सदियों से लोग शांति और आस्था की तलाश में आते रहे हैं। लेकिन अब यही चित्रकूट एक नए युग की दहलीज पर खड़ा है—जहां भक्ति के साथ-साथ शक्ति का भी उदय हो रहा है। यह कहानी है उस बदलाव की, जो न केवल एक शहर की पहचान बदल रहा है, बल्कि पूरे बुंदेलखंड के भविष्य को एक नई दिशा दे रहा है।

बुधवार का दिन चित्रकूट के इतिहास में एक सुनहरे अध्याय के रूप में दर्ज हो गया, जब मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड (BEL) को 75 हेक्टेयर जमीन का आवंटन पत्र सौंपा। यह केवल कागज का एक टुकड़ा नहीं था, बल्कि एक ऐसे सपने की शुरुआत थी, जो लंबे समय से बुंदेलखंड के लोगों की आंखों में पल रहा था—रोजगार, विकास और आत्मनिर्भरता का सपना।

जब BEL के चेयरमैन और मैनेजिंग डायरेक्टर मनोज जैन उस मंच पर मौजूद थे, तो यह केवल एक औपचारिक कार्यक्रम नहीं था, बल्कि यह संकेत था कि अब चित्रकूट केवल तीर्थस्थल नहीं रहेगा, बल्कि तकनीक और रक्षा उत्पादन का भी केंद्र बनेगा। लगभग 562.5 करोड़ रुपये के निवेश से बनने वाली यह अत्याधुनिक यूनिट राडार और एयर डिफेंस सिस्टम जैसे महत्वपूर्ण रक्षा उपकरण तैयार करेगी—वे उपकरण, जो देश की सुरक्षा की रीढ़ होते हैं।

कल्पना कीजिए उस दृश्य की, जब आने वाले वर्षों में चित्रकूट की धरती पर अत्याधुनिक मशीनें चल रही होंगी, इंजीनियर और तकनीशियन अपने काम में व्यस्त होंगे, और उसी भूमि पर जहां कभी साधु-संत तपस्या करते थे, अब देश की रक्षा के लिए तकनीक का निर्माण हो रहा होगा। यह केवल विकास नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक और औद्योगिक संगम है—जहां अतीत और भविष्य एक साथ खड़े हैं।

इस परियोजना का सबसे बड़ा प्रभाव उन युवाओं पर पड़ेगा, जो अब तक रोजगार की तलाश में अपने गांव-शहर छोड़कर दूर-दराज के महानगरों में जाते थे। अब उन्हें अपने ही क्षेत्र में अवसर मिलेंगे। करीब 300 लोगों को सीधे रोजगार मिलेगा, लेकिन असली बदलाव उन हजारों लोगों के जीवन में आएगा, जिन्हें अप्रत्यक्ष रूप से काम मिलेगा—छोटे व्यापारियों, परिवहन से जुड़े लोगों, और स्थानीय सेवाओं में लगे लोगों के लिए यह एक नई शुरुआत होगी।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने जब कहा कि इस परियोजना से पलायन रुकेगा, तो यह केवल एक बयान नहीं था, बल्कि एक सच्चाई की झलक थी। बुंदेलखंड, जो वर्षों से रोजगार की कमी और संसाधनों के अभाव से जूझता रहा है, अब आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहा है।

इस पूरे बदलाव के पीछे एक बड़ा विजन है—'आत्मनिर्भर भारत'। जब देश अपने रक्षा उपकरण खुद बनाएगा, तो न केवल विदेशी निर्भरता कम होगी, बल्कि भारत की तकनीकी क्षमता भी दुनिया के सामने आएगी। BEL की यह यूनिट केवल एक फैक्ट्री नहीं होगी, बल्कि एक ऐसा केंद्र बनेगी, जहां से नवाचार और तकनीक का प्रवाह होगा।

और इसका असर केवल बड़े उद्योगों तक सीमित नहीं रहेगा। छोटे और मध्यम उद्योग (MSME) भी इस बदलाव का हिस्सा बनेंगे। वे इस परियोजना के साथ जुड़कर नए अवसर पाएंगे, नई तकनीकों से सीखेंगे और अपने व्यवसाय को आगे बढ़ाएंगे। यह एक ऐसा चक्र होगा, जो पूरे क्षेत्र की अर्थव्यवस्था को गति देगा।

आज का चित्रकूट एक नए सफर पर निकल चुका है। जहां एक ओर मंदिरों की घंटियां बजती हैं, वहीं दूसरी ओर मशीनों की आवाज भी गूंजेगी। जहां श्रद्धालु आस्था लेकर आएंगे, वहीं इंजीनियर और वैज्ञानिक अपने सपनों को साकार करने के लिए काम करेंगे।

यह कहानी केवल एक परियोजना की नहीं है, बल्कि एक बदलाव की है—एक ऐसे बदलाव की, जो दिखाता है कि कैसे परंपरा और आधुनिकता एक साथ चल सकती हैं। चित्रकूट अब केवल एक तीर्थ नहीं, बल्कि एक प्रेरणा बन चुका है—यह संदेश देते हुए कि अगर सही दिशा और दृढ़ संकल्प हो, तो कोई भी क्षेत्र अपनी पहचान को नए सिरे से गढ़ सकता है।

आने वाले समय में जब लोग चित्रकूट का नाम लेंगे, तो उनके मन में केवल रामायण की गाथाएं ही नहीं, बल्कि भारत की रक्षा शक्ति और आत्मनिर्भरता की कहानी भी गूंजेगी और यही इस परिवर्तन की सबसे बड़ी सफलता होगी।

RNI No.: UPHIN/25/A1698 Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By SUSHILA SHUKLA at Krishna Printiers, 271/31 Chakmaki Dugawa, Rajendranagar, Lucknow-226018, Uttar Pradesh. and Published from 538 GHA/85 Pataurganj, Near Janki Prasad Dharmshala, Sitapur Road, Niralanagar, Lucknow-226020, Uttar Pradesh. Editor : VINOD KUMARI
Regd.Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424 Gujarat,India. Phone : (o) 7698333307 (M) 8485951747,7096333307
Email:navsarjansanskruti2016@gmail.com* navsarjansanskruti2016@yahoo.com*Website : www.navsarjansanskruti.com

कागजों में जिंदा सरकारी सेवा: वीआरएस ले चुके डॉक्टर को मिला प्रमोशन, झारखंड स्वास्थ्य तंत्र पर गंभीर सवाल

(जीएनएस)। चाईबासा। झारखंड के स्वास्थ्य विभाग से जुड़ा एक ऐसा मामला सामने आया है, जिसने प्रशासनिक व्यवस्था की विश्वसनीयता पर गहरे सवाल खड़े कर दिए हैं। पश्चिमी सिंहभूम जिले से आई इस खबर ने सरकारी रिकॉर्ड की पारदर्शिता और सिस्टम की कार्यप्रणाली को कटघरे में खड़ा कर दिया है। मामला एक ऐसे डॉक्टर से जुड़ा है, जिन्होंने वर्षों पहले स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति (वीआरएस) ले ली थी, लेकिन अब 2026 की तबादला और प्रोन्नति सूची में न केवल उनका नाम शामिल किया गया है, बल्कि उन्हें एक उच्च पद पर पदस्थापित भी दिखाया गया है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार, चाईबासा सदर स्थित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र से 29 जुलाई 2020 को जारी आधिकारिक पत्र में डॉ. अरुण कुमार को 1 अगस्त 2010 से प्रभावी वीआरएस की स्वीकृति दी गई थी। इस प्रक्रिया के तहत उनके पेंशन से जुड़े सभी आवश्यक दस्तावेज भी संबंधित कार्यालयों को भेजे जा चुके थे। यानी सरकारी रिकॉर्ड के अनुसार वे एक दशक से भी अधिक समय पहले सेवा से पूरी तरह अलग हो चुके थे और सक्रिय सरकारी जिम्मेदारियों से उनका कोई संबंध नहीं बचा था।

लेकिन इस पूरी कहानी में चौंकाने वाला मोड़ तब आया, जब 24 मार्च 2026 को जारी झारखंड स्वास्थ्य विभाग की तबादला और प्रोन्नति सूची में उसी डॉ. अरुण कुमार का नाम सामने आया। सूची में उन्हें न केवल वर्तमान में कार्यरत चिकित्सा पदाधिकारी के रूप में दर्शाया गया, बल्कि उन्हें प्रोन्नत करते हुए छोटानागपुर प्रमंडल, रांची में क्षेत्रीय उपनिदेशक जैसे महत्वपूर्ण पद पर पदस्थापित भी कर दिया गया। यही वह बिंदु है,

जहां से पूरा मामला रहस्यमय और गंभीर बन जाता है।

अब सबसे बड़ा सवाल यही उठ रहा है कि जो व्यक्ति 2010 से सरकारी सेवा में नहीं है, उसे 2026 में प्रमोशन कैसे मिल सकता है। क्या विभाग के रिकॉर्ड इतने पुराने और अपडेट से वंचित हैं कि एक सेवानिवृत्त व्यक्ति को अब भी सेवा में दिखाया जा रहा है? या फिर यह किसी बड़ी प्रशासनिक लापरवाही का परिणाम है? इससे भी गंभीर आशंका यह जताई जा रही है कि कहीं कागजों में ही सेवा जारी दिखाकर नियमों को दरकिनार तो नहीं किया गया। मामले को और जटिल बनाता है यह तथ्य कि डॉ. अरुण कुमार वर्तमान में चाईबासा में अपना निजी अस्पताल संचालित कर रहे हैं। सामान्य परिस्थितियों में वीआरएस लेने के बाद निजी प्रैक्टिस करना पूरी तरह वैध है, लेकिन उसी व्यक्ति का सरकारी सेवा में सक्रिय दिखना और प्रमोशन सूची में नाम आना नियमों और नैतिकता दोनों के खिलाफ माना जाता है। यह स्थिति न केवल प्रशासनिक प्रक्रिया की खामियों को उजागर करती है, बल्कि यह भी संकेत देती है कि कहीं न कहीं सिस्टम के भीतर गंभीर चूक या गड़बड़ी मौजूद है।

स्वास्थ्य विभाग से जुड़े जानकारों और पूर्व अधिकारियों का मानना है कि यदि डॉ. अरुण कुमार को विधिवत पुनः सेवा में बहाल नहीं किया गया है, तो यह मामला नियमों का स्पष्ट उल्लंघन है और इसकी उच्चस्तरीय जांच अनिवार्य होनी चाहिए। उनका कहना है कि इस तरह की घटनाएं न केवल विभाग की साख को नुकसान पहुंचाती हैं, बल्कि पूरे सरकारी तंत्र पर जनता के विश्वास को भी कमजोर करती हैं।

अब तक विभाग की ओर से इस पूरे मामले पर कोई आधिकारिक प्रतिक्रिया सामने नहीं आई है, जिससे संदेह और गहराता जा रहा है। स्थानीय स्तर पर यह मुद्दा चर्चा का केंद्र बन गया है और लोग यह जानना चाहते हैं कि आखिर इतनी बड़ी चूक कैसे हो सकती है। क्या यह केवल तकनीकी गलती है या इसके पीछे कोई बड़ी लापरवाही या मिलीभगत छिपी हुई है?

यह मामला केवल एक व्यक्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह पूरे सिस्टम की कार्यप्रणाली पर सवाल खड़ा करता है। यदि समय रहते इस तरह की त्रुटियों को नहीं सुधारा गया, तो भविष्य में इससे भी बड़े प्रशासनिक संकट उत्पन्न हो सकते हैं। फिलहाल, सभी की निगाहें इस बात पर टिकी हैं कि सरकार और स्वास्थ्य विभाग इस मामले में क्या कार्रवाई करते हैं और क्या सच्चाई सामने आती है।

दहेज की आग में फिर झुलसी एक जिंदगी: बगहा में विवाहिता को जिंदा जलाने का सनसनीखेज मामला

(जीएनएस)। बगहा। बिहार के पश्चिम चंपारण जिले के रामनगर थाना क्षेत्र से एक दिल दहला देने वाली घटना सामने आई है, जिसने एक बार फिर समाज को झकझोर कर रख दिया है। जोलहा टोली में मंगलवार देर रात करीब दो बजे एक 28 वर्षीय विवाहिता को कथित रूप से पेट्रोल डालकर जिंदा जला दिया गया। इस दर्दनाक घटना में गंभीर रूप से झुलसी महिला ने इलाज के दौरान दम तोड़ दिया, जिससे पूरे इलाके में सनसनी फैल गई और लोगों के बीच गहरा आक्रोश देखा जा रहा है। मृतका की पहचान खुशबू नेशा के रूप में हुई है, जो औरंगजेब खान उर्फ राजा खान की पत्नी थी। घटना के समय आसपास के लोग अचानक उठी चीख-पुकार और घर से निकलती आग की लपटों को देखकर मौके पर पहुंचे। वहां का दृश्य इतना भयावह था कि जिसने भी देखा, सिहर उठा। खुशबू नेशा आग की लपटों में घिरी हुई थी और मदद के लिए चिल्ला रही थी। स्थानीय लोगों ने तत्परता दिखाते हुए तुरंत पुलिस को सूचना दी और किसी तरह आग बुझाने की कोशिश की।

सूचना मिलने के बाद 112 पुलिस टीम और स्थानीय थाना पुलिस मौके पर पहुंची और गंभीर रूप से झुलसी महिला को तत्काल रामनगर प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया गया। वहां मौजूद चिकित्सक डॉ. सुजीत कुमार ने प्राथमिक उपचार के बाद उसकी गंभीर स्थिति को देखते हुए उसे बेतिया स्थित जीएमसीएच रेफर कर दिया। अस्पताल में डॉक्टरों ने बताया कि महिला करीब 90 प्रतिशत तक झुलस चुकी थी, जिससे उसकी हालत अत्यंत नाजुक बनी हुई थी। तमाम कोशिशों के बावजूद इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई।

घटना के बाद मृतका के मायके पक्ष के लोग भी अस्पताल पहुंच गए। मृतका के भाई शेख सद्दाम ने ससुराल पक्ष पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि खुशबू को लंबे समय से दहेज के लिए प्रताड़ित किया जा रहा था। उन्होंने आरोप लगाया कि इसी दबाव के चलते ससुराल वालों ने पेट्रोल डालकर उसकी हत्या कर दी। यह आरोप सामने आने के बाद मामले ने और गंभीर रूप ले लिया है।

घटना के बाद से ही ससुराल पक्ष के सभी लोग घर में ताला लगाकर फरार बताए जा रहे हैं, जिससे संदेह और गहरा गया है। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर घर को सील कर दिया है और आरोपियों की तलाश में छापेमारी शुरू कर दी है। बुधवार सुबह फॉरेंसिक टीम ने घटनास्थल पर पहुंचकर बारीकी से जांच की और जरूरी साक्ष्य एकत्र किए। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि हर पहलू से मामले की जांच की जा रही है और दोषियों को जल्द ही गिरफ्तार किया जाएगा।

यह घटना न केवल एक आपराधिक मामला है, बल्कि समाज में व्याप्त दहेज प्रथा और महिलाओं के खिलाफ हिंसा की भयावह सच्चाई को भी उजागर करती है। आए दिन सामने आने वाली ऐसी घटनाएं यह सवाल खड़ा करती हैं कि कानून और जागरूकता के बावजूद आखिर कब तक बेटियां इस तरह अत्याचार का शिकार होती रहेंगी।

स्थानीय लोगों में इस घटना को लेकर भारी आक्रोश है और वे दोषियों के खिलाफ कड़ी से कड़ी कार्रवाई की मांग कर रहे हैं। समाज के विभिन्न वर्गों ने इस घटना की निंदा करते हुए कहा कि ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए केवल कानून ही नहीं, बल्कि सामाजिक सोच में भी बदलाव जरूरी है।

पुलिस का कहना है कि पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट और फॉरेंसिक जांच के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी। फिलहाल पूरे इलाके में तनाव का माहौल है और पुलिस स्थिति पर नजर बनाए हुए है। यह घटना एक बार फिर यह सोचने पर मजबूर करती है कि आखिर कब तक महिलाओं के खिलाफ इस तरह की अमानवीय घटनाएं होती रहेंगी और समाज कब इससे मुक्ति पाएगा।

कृषि नवाचार को नई उड़ान: मुख्यमंत्री योगी ने वैज्ञानिकों को सम्मानित कर दिया शोध को बढ़ावा

(जीएनएस)। लखनऊ। उत्तर प्रदेश की कृषि व्यवस्था को आधुनिक तकनीक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए मुख्यमंत्री Yogi Adityanath ने बुधवार को गन्ना अनुसंधान संस्थान में आयोजित छठे कृषि विज्ञान कांग्रेस का शुभारम्भ किया। इस अवसर पर उन्होंने 'उत्तर प्रदेश कृषि वैज्ञानिक सम्मान योजना 2025-26' के अंतर्गत 15 उत्कृष्ट कृषि वैज्ञानिकों को सम्मानित किया, जबकि वर्ष 2025 में उल्लेखनीय कार्य करने वाले उत्तर प्रदेश कृषि विज्ञान अकादमी के 30 वैज्ञानिकों को भी सम्मान प्रदान किया गया। यह आयोजन न केवल वैज्ञानिकों के योगदान को सम्मानित करने का मंच बना, बल्कि कृषि के भविष्य को लेकर नई दिशा तय करने का अवसर भी साबित हुआ।

कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री ने स्पष्ट रूप से कहा कि उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था का आधार कृषि है और इसे मजबूत करने के लिए वैज्ञानिकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि बदलते समय के साथ कृषि में तकनीकी नवाचार, अनुसंधान और आधुनिक पद्धतियों को अपनाना अनिवार्य हो गया है। जलवायु परिवर्तन, मिट्टी की गुणवत्ता में गिरावट और उत्पादन लागत में वृद्धि जैसी चुनौतियों से निपटने के लिए वैज्ञानिक समाधान ही सबसे प्रभावी माध्यम हैं।

इस अवसर पर राज्य के कृषि मंत्री Surya Pratap Shahi और राज्यमंत्री Baldev Olakh भी मौजूद रहे। कार्यक्रम में कई महत्वपूर्ण पुस्तकों का विमोचन भी किया गया, जिनमें कृषि के आधुनिक तरीकों, नई तकनीकों और शोध आधारित निष्कर्षों को शामिल किया गया है। इन पुस्तकों के माध्यम से किसानों तक नवीनतम जानकारी पहुंचाने और उन्हें वैज्ञानिक खेती के लिए प्रेरित करने का प्रयास किया जा रहा है।

कृषि विज्ञान कांग्रेस के इस मंच पर विशेषज्ञों और वैज्ञानिकों ने कृषि क्षेत्र में नवाचार, स्मार्ट फार्मिंग, ड्रोन तकनीक, जैविक खेती और जल संरक्षण जैसे विषयों पर विस्तृत चर्चा की। इस दौरान यह भी विचार किया गया कि कैसे छोटे और सीमांत किसानों तक तकनीकी संसाधनों को सुलभ बनाया जाए, ताकि वे भी आधुनिक कृषि पद्धतियों का लाभ उठा सकें।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अपने संबोधन में यह भी कहा कि सरकार किसानों की आय बढ़ाने और कृषि को लाभकारी बनाने के लिए लगातार प्रयास कर रही है। उन्होंने बताया कि प्रदेश में कृषि से जुड़े स्टार्टअप्स, एग्री-टेक इनोवेशन और डिजिटल प्लेटफॉर्म को बढ़ावा दिया जा रहा है, जिससे किसानों को बाजार, मौसम और तकनीकी जानकारी समय पर मिल सके।

यह आयोजन इस बात का संकेत है कि उत्तर प्रदेश सरकार कृषि को केवल पारंपरिक क्षेत्र के रूप में नहीं, बल्कि एक आधुनिक और तकनीक-आधारित सेक्टर के रूप में विकसित करने की दिशा में काम कर रही है। वैज्ञानिकों को सम्मानित करना न केवल उनके योगदान की सराहना है, बल्कि यह संदेश भी है कि भविष्य की खेती ज्ञान, अनुसंधान और नवाचार पर आधारित होगी।

कार्यक्रम के अंत में यह स्पष्ट रूप से महसूस किया गया कि जब सरकार, वैज्ञानिक और किसान एक साथ मिलकर काम करेंगे, तभी कृषि क्षेत्र में वास्तविक परिवर्तन संभव होगा। यह पहल न केवल किसानों के जीवन स्तर को सुधारने में मदद करेगी, बल्कि राज्य की अर्थव्यवस्था को भी नई मजबूती प्रदान करेगी।

13 साल के बेटे की सूझबूझ ने तोड़ा ठगों का जाल, 10 घंटे के 'डिजिटल कैद' से माता-पिता को बचाकर रचा साहस का नया अध्याय

(जीएनएस)। बरेली। यह कहानी सिर्फ एक साइबर ठगी से बचाव की नहीं, बल्कि हिम्मत, समझदारी और जागरूकता की ऐसी मिसाल है, जिसने यह साबित कर दिया कि उम्र नहीं, समझ ही सबसे बड़ी ताकत होती है। उत्तर प्रदेश के Bareilly के प्रेमनगर इलाके में रहने वाले एक साधारण परिवार के लिए 6 अप्रैल का दिन किसी डरावने सपने से कम नहीं था। लेकिन उसी डर के बीच एक 13 साल के बच्चे ने ऐसा साहस दिखाया, जिसने न सिर्फ अपने माता-पिता को बचाया, बल्कि लाखों रुपये की ठगी को भी रोक दिया।

संजय कुमार के घर में उस दिन सब कुछ सामान्य था, जब अचानक एक अनजान वीडियो कॉल ने पूरे माहौल को बदल दिया। स्क्रीन पर एक वर्दीधारी व्यक्ति नजर आया, जिसने खुद को एटीएस अधिकारी बताया। आवाज में रौब, चेहरे पर सख्ती और शब्दों में डर—सब कुछ इतना वास्तविक लग रहा था कि संजय और उनकी पत्नी रोशी सक्सेना को शक करने का मौका ही नहीं मिला।

ठगों ने पहले भरोसा जीतने के लिए रोशी का आधार नंबर बताया और फिर एक ऐसा आरोप लगाया, जिसने परिवार की रूह तक हिला दी—कि उनके दस्तावेज आतंकवादी गतिविधियों में इस्तेमाल हो रहे हैं। इसके बाद कॉल को कथित 'पुणे मुख्यालय' ट्रांसफर कर दिया गया, जहां कई नकली अधिकारी स्क्रीन पर दिखाई दिए। यह पूरा सेटअप इतना सुनियोजित था कि किसी को भी यह असली जांच लग सकती थी।

धीरे-धीरे डर का जाल कसता गया। ठगों ने आदेश दिया कि घर का दरवाजा बंद कर लिया जाए और जांच पूरी होने तक कोई बाहर न जाए। इस तरह पूरा परिवार उनके 'डिजिटल अरेस्ट' में आ गया—एक ऐसा जाल, जिसमें न हथकड़ी होती है, न जेल की दीवारें, लेकिन डर इतना गहरा होता है कि इंसान खुद ही कैदी बन जाता है।

संजय से बैंक खाते, आधार कार्ड, पैन कार्ड जैसी संवेदनशील जानकारियां ले ली गईं। यहां तक कि एक फर्जी गिरफ्तारी वारंट भी भेजा गया, जिसमें गंभीर धाराओं का जिक्र था। परिवार पूरी तरह सहम चुका था और हर निर्देश का पालन कर रहा था।

लेकिन इस डर के माहौल में एक दिमाग शांत था—तन्मय का। आठवीं कक्षा में पढ़ने वाला यह 13 साल का बच्चा पहले ही अखबारों और सोशल मीडिया के जरिए 'डिजिटल अरेस्ट' जैसे फ्रॉड के बारे में जान चुका था। उसे समझ आ गया कि यह कोई असली जांच नहीं, बल्कि एक सुनियोजित ठगी है।

तन्मय ने सीधे विरोध करने की बजाय समझदारी से काम लिया। उसने इशारों में अपने पिता को सतर्क किया, उन्हें हिम्मत दी और धीरे-धीरे हालात को अपने पक्ष में मोड़ने की कोशिश शुरू की। बहाने बनाकर कॉल को बीच-बीच में कटवाया गया, जिससे ठगों का नियंत्रण थोड़ा कमजोर पड़ा। इस दौरान उन्होंने जो संदिग्ध एप डाउनलोड कराए थे, तन्मय ने उन्हें चुपचाप डिलीट कर दिया।

जब ठग लगातार दबाव बना रहे थे, तब तन्मय ने सबसे बड़ा जोखिम उठाया। वह किसी तरह घर से बाहर निकला और पड़ोसी को पूरी घटना बताई। यही वह पल था, जिसने पूरी कहानी की दिशा बदल दी।

पड़ोसी ने तुरंत पुलिस को सूचना दी। पुलिस और साइबर सेल की टीम ने बिना देर किए कार्रवाई की और महज 10 मिनट के भीतर संजय का बैंक खाता फ्रीज कर दिया। खाते में मौजूद करीब 6 लाख रुपये सुरक्षित बच गए।

जब पुलिस मौके पर पहुंची, तो पूरा परिवार सदमे में था, लेकिन राहत भी उतनी ही बड़ी थी। अधिकारियों ने तन्मय की जमकर सराहना की। Anurag Arya (एसएसपी) ने साइबर टीम को इनाम देकर सम्मानित किया और इस घटना को जागरूकता का बड़ा उदाहरण बताया।

यह घटना एक बड़ा सबक भी देती है। पुलिस ने साफ किया है कि 'डिजिटल अरेस्ट' जैसा कोई कानूनी प्रावधान नहीं होता। कोई भी अधिकारी वीडियो कॉल पर जांच नहीं करता और न ही इस तरह डराकर जानकारी मांगता है। अगर कोई ऐसा करता है, तो वह निश्चित रूप से ठगी है।

आज के डिजिटल युग में जहां तकनीक ने जीवन आसान बनाया है, वहीं अपराधियों ने भी नए तरीके खोज लिए हैं। लेकिन तन्मय की यह कहानी बताती है कि अगर जागरूकता और समझदारी हो, तो सबसे खतरनाक जाल भी तोड़ा जा सकता है।

एक तरफ अनुभवी ठग थे, जो तकनीक और डर का इस्तेमाल कर रहे थे, और दूसरी तरफ एक 13 साल का बच्चा—जिसके पास सिर्फ जानकारी, हिम्मत और सही समय पर लिया गया फैसला था। अंत में जीत उसी की हुई, जिसने घबराने के बजाय सोच-समझकर कदम उठाया।

यह कहानी केवल बरेली की नहीं, बल्कि हर उस घर की है, जहां मोबाइल और इंटरनेट मौजूद है। और यह याद दिलाती है कि कभी-कभी सबसे बड़ा हीरो वही होता है, जिसकी हम सबसे कम उम्मीद करते हैं।

नदियों की विरासत पर बसता नया शहर: ग्रेटर आगरा बनेगा संस्कृति और आधुनिकता का संगम, बदलेगा पूरे क्षेत्र का भविष्य

(जीएनएस)। आगरा। इतिहास की गूंज और आधुनिक विकास की रफ्तार—जब ये दोनों एक साथ कदम मिलाते हैं, तब एक नए युग की शुरुआत होती है। Agra अब सिर्फ ताजमहल की नगरी नहीं रहेगा, बल्कि एक ऐसे भविष्य का केंद्र बनने जा रहा है, जहां भारतीय संस्कृति की आत्मा और आधुनिक शहरी जीवनशैली का अनूठा मेल देखने को मिलेगा। "ग्रेटर आगरा" परियोजना इसी बदलाव की कहानी लिख रही है—एक ऐसी कहानी, जो केवल इमारतों और सड़कों तक सीमित नहीं, बल्कि सोच, पहचान और विकास की नई परिभाषा गढ़ रही है।

यह परियोजना केवल एक शहरी विस्तार नहीं है, बल्कि एक विचार है—एक ऐसा विचार जिसमें भारत की पवित्र नदियों को शहर की आत्मा बनाया गया है। सिंधु से लेकर कावेरी तक, 10 टाउनशिप को इन नदियों के नाम पर बसाया जा रहा है—सिंधुपुरम, गोमतीपुरम, गंगापुरम, यमुनापुरम, बेतवापुरम, महानदीपुरम, नर्मदापुरम, गोदावरीपुरम, कृष्णापुरम और कावेरीपुरम। यह नाम केवल पहचान नहीं हैं, बल्कि उस सांस्कृतिक धरोहर का प्रतीक हैं, जिसने हजारों वर्षों से भारतीय सभ्यता को जीवन दिया है।

करीब 450 हेक्टेयर में फैली और लगभग 5,142 करोड़ रुपये की लागत वाली यह महत्वाकांक्षी योजना Agra Development Authority द्वारा विकसित की जा रही है। यह परियोजना मुख्यमंत्री शहरी विस्तारीकरण योजना के तहत आकार ले रही है और इसका उद्देश्य केवल एक नया शहर बसाना नहीं, बल्कि एक ऐसा मॉडल तैयार करना है, जो आने वाले समय में पूरे देश के लिए उदाहरण बन सके।

कल्पना कीजिए एक ऐसे शहर की, जहां हर सुविधा आपके आसपास हो—स्कूल, अस्पताल, बैंक, होटल, कम्युनिटी सेंटर, पुलिस चौकी, फायर स्टेशन—सब कुछ एक सुनियोजित ढांचे में। यहां करीब 1.5 लाख लोगों के लिए आधुनिक आवासीय व्यवस्था तैयार की जा रही है, जिसमें 4,712 प्लॉट्स के जरिए आवासीय, व्यावसायिक और मिश्रित उपयोग की पूरी योजना बनाई गई है।

लेकिन यह विकास केवल कंक्रीट तक सीमित नहीं है। इस शहर की सबसे बड़ी खासियत इसका संतुलन है—प्रकृति और प्रगति के बीच संतुलन। हर टाउनशिप में कम से कम 15 प्रतिशत क्षेत्र ग्रीन स्पेस के लिए आरक्षित रखा गया है। पार्क, ओपन स्पेस और खेल सुविधाएं न केवल पर्यावरण को संतुलित रखेंगी, बल्कि लोगों के जीवन स्तर को भी बेहतर बनाएंगी।

कनेक्टिविटी इस परियोजना की रीढ़ है। 100 मीटर चौड़ी इनर रिंग रोड के पास स्थित यह क्षेत्र National Highway 19, फतेहाबाद रोड और यमुना एक्सप्रेस-वे से जुड़ा हुआ है। Yamuna Expressway की निकटता इसे दिल्ली-एनसीआर से सीधे जोड़ती है, जिससे यह क्षेत्र न केवल रहने के लिए, बल्कि व्यापार और निवेश के लिए भी बेहद आकर्षक बन जाता है।

आज जब Noida और Gurugram जैसे शहरों पर जनसंख्या और इंफ्रास्ट्रक्चर का दबाव लगातार बढ़ रहा है, ऐसे में ग्रेटर आगरा एक नए विकल्प के रूप में उभर रहा है। यह न केवल इन शहरों का दबाव कम करेगा, बल्कि एक संतुलित क्षेत्रीय विकास की दिशा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

परियोजना का एक और महत्वपूर्ण पहलू इसका आर्थिक प्रभाव है। निर्माण कार्य से लेकर उद्योग और सेवा क्षेत्र तक, यह परियोजना लाखों लोगों के लिए रोजगार के नए अवसर पैदा करेगी। बेहतर इंफ्रास्ट्रक्चर और कनेक्टिविटी के कारण बड़ी कंपनियां यहां निवेश के लिए आकर्षित होंगी, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को नई ऊर्जा मिलेगी।

यमुनापुरम को जहां एक बड़े कॉमर्शियल हब के रूप में विकसित किया जा रहा है, वहीं कावेरीपुरम को वाटर-बेस्ड एक्टिविटी और पर्यटन के केंद्र के रूप में तैयार किया जाएगा। इसका मतलब है कि यह शहर केवल रहने की जगह नहीं होगा, बल्कि एक ऐसा गंतव्य बनेगा, जहां लोग काम भी करेंगे, निवेश भी करेंगे और घूमने भी आएंगे।

यह पूरा प्रोजेक्ट एक बड़े विजन का हिस्सा है—एक ऐसा विजन जिसमें भारत का शहरी विकास केवल इमारतों की ऊंचाई से नहीं, बल्कि उसकी सांस्कृतिक गहराई और पर्यावरणीय संतुलन से मापा जाएगा।

आने वाले समय में जब ग्रेटर आगरा पूरी तरह विकसित होगा, तब यह केवल एक शहर नहीं होगा—यह एक अनुभव होगा। एक ऐसा अनुभव, जहां अतीत की विरासत और भविष्य की संभावनाएं एक साथ जीवित होंगी।

Agra अब केवल इतिहास का शहर नहीं रहेगा, बल्कि वह भविष्य की कहानी भी लिखेगा—एक ऐसी कहानी, जो पूरे देश को यह सिखाएगी कि विकास और संस्कृति साथ-साथ कैसे आगे बढ़ सकते हैं।

दो वेस्टर्न डिस्टर्बेंस का असर: उत्तर भारत में बदला मौसम, पहाड़ों पर बर्फबारी और मैदानों में ओले-आंधी से तबाही

(जीएनएस)। लखनऊ/देहरादून। उत्तर भारत इस समय मौसम के बड़े बदलाव का सामना कर रहा है, जहां एक साथ सक्रिय हुए दो वेस्टर्न डिस्टर्बेंस ने पूरे क्षेत्र का मिजाज पूरी तरह बदल दिया है। पहाड़ों से लेकर मैदानी इलाकों तक इसका असर साफ दिखाई दे रहा है। जहां उत्तराखंड के ऊंचाई वाले क्षेत्रों में भारी बर्फबारी हो रही है, वहीं उत्तर प्रदेश, राजस्थान और मध्य प्रदेश जैसे राज्यों में तेज आंधी, बारिश और ओलावृष्टि ने जनजीवन को बुरी तरह प्रभावित कर दिया है।

उत्तराखंड के चारों धाम—केदारनाथ, बद्रीनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री—इस समय बर्फ की सफेद चादर में ढक चुके हैं। लगातार हो रही बर्फबारी ने तापमान में भारी गिरावट ला दी है और तीर्थ क्षेत्रों में ठंड अचानक बढ़ गई है। राज्य के सभी जिलों में रुक-रुककर बारिश हो रही है, जिससे पहाड़ी रास्तों पर फिसलन और भूस्खलन का खतरा भी बढ़ गया है। मौसम विभाग ने आने वाले दिनों में भी इसी तरह के हालात बने रहने की चेतावनी दी है। राजस्थान में भी मौसम ने अचानक करवट ली है। श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, नागौर और आसपास के जिलों में तेज आंधी के साथ भारी बारिश और ओलावृष्टि दर्ज की गई है। कई जगहों पर एक इंच से ज्यादा बारिश हुई, जिससे खेतों में खड़ी फसल को भारी नुकसान पहुंचा है। भरतपुर जिले में एक दर्दनाक घटना भी सामने आई, जहां एक मकान पर बिजली गिरने से गैस सिलेंडर में विस्फोट हो गया, जिससे इलाके में दहशत फैल गई। उत्तर प्रदेश में भी मौसम का असर व्यापक रूप से देखा जा रहा है। मेरठ, बरेली और शाहजहांपुर में दोपहर के समय ओले गिरे,

जिससे सड़कों पर सफेदी छा गई और लोगों को अचानक ठंड का अहसास होने लगा। राजधानी लखनऊ समेत गोरखपुर, गोंडा, जौनपुर और अलीगढ़ सहित करीब 25 जिलों में तेज हवाओं के साथ रुक-रुककर बारिश हो रही है। मौसम विभाग के अनुसार, हवाओं की रफ्तार 60 किलोमीटर प्रति घंटे तक पहुंच सकती है, जो पेड़ों और बिजली के खंभों को नुकसान पहुंचा सकती है।

इस बदलते मौसम का सबसे दुखद पहलू यह है कि पिछले एक सप्ताह में उत्तर प्रदेश में आंधी और बिजली गिरने की घटनाओं में 15 लोगों की जान जा चुकी है। यह आंकड़ा इस बात का संकेत है कि मौसम का यह बदलाव केवल असुविधा ही नहीं, बल्कि जानलेवा भी साबित हो रहा है। प्रशासन ने लोगों से सतर्क रहने और खराब मौसम के दौरान घरों में सुरक्षित रहने की अपील की है। मध्य प्रदेश में भी मौसम का असर कम नहीं है। यहां तीन साइक्लोनिक सर्कुलेशन सक्रिय हैं, जिससे कई जिलों में बारिश और ओलावृष्टि की संभावना बनी हुई है। भोपाल, ग्वालियर, भिंड, मुरैना, पन्ना, सतना और रीवा समेत 18 जिलों में मौसम विभाग ने अलर्ट जारी किया है। दतिया, निवाड़ी, छतरपुर और टीकमगढ़ में विशेष रूप से ओले गिरने की चेतावनी दी गई है। इससे किसानों की चिंता और बढ़ गई है, क्योंकि इस समय फसलें कटाई के लिए तैयार हैं।

मौसम में आए इस बड़े बदलाव का असर तापमान पर भी साफ देखा जा रहा है। कई इलाकों में तापमान में 5 से 7 डिग्री सेल्सियस तक की गिरावट दर्ज की गई है, जिससे गर्मी से राहत तो मिली है, लेकिन अचानक आई ठंड और बारिश ने लोगों को असहज कर दिया है।

विशेषज्ञों का मानना है कि इस तरह के मौसमीय बदलाव जलवायु परिवर्तन के संकेत भी हो सकते हैं, जहां मौसम का पैटर्न असामान्य होता जा रहा है। एक ही समय में बर्फबारी, आंधी, बारिश और ओलावृष्टि जैसी घटनाएं इस बात की ओर इशारा करती हैं कि आने वाले समय में मौसम और अधिक अनिश्चित हो सकता है।

फिलहाल, पूरे उत्तर भारत में प्रशासन और मौसम विभाग की नजर हालात पर बनी हुई है। लोगों को सलाह दी जा रही है कि वे मौसम की चेतावनियों को गंभीरता से लें, अनावश्यक यात्रा से बचें और सुरक्षित स्थानों पर रहें। यह मौसम भले ही कुछ दिनों में सामान्य हो जाए, लेकिन इसके प्रभाव लंबे समय तक महसूस किए जा सकते हैं, खासकर किसानों और ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के लिए।

महंगाई पर आरबीआई की सतर्क नजर: 4.6% के अनुमान के बीच अर्थव्यवस्था के संतुलन की बड़ी चुनौती

(जीएनएस)। मुंबई। भारत की अर्थव्यवस्था एक ऐसे दौर से गुजर रही है, जहां हर छोटा बदलाव आम आदमी की जेब और देश की विकास गति दोनों पर सीधा असर डालता है। इसी संवेदनशील स्थिति को ध्यान में रखते हुए Reserve Bank of India ने चालू वित्त वर्ष 2026-27 के लिए खुदरा महंगाई दर 4.6 प्रतिशत रहने का अनुमान जताया है। यह आंकड़ा भले ही सरकार द्वारा तय 4 प्रतिशत के लक्ष्य (2 प्रतिशत के दायरे) के भीतर आता हो, लेकिन इसके पीछे छिपी आर्थिक कहानी कहीं अधिक जटिल और गहरी है।

जब आम आदमी बाजार में सब्जी, तेल या गैस सिलेंडर खरीदने जाता है, तो उसे केवल बढ़ी हुई कीमतें दिखाई देती हैं। लेकिन इन कीमतों के पीछे वैश्विक राजनीति, मौसम की अनिश्चितता और आपूर्ति श्रृंखला की जटिलताएं काम कर रही होती हैं। आरबीआई के गवर्नर Sanjay Malhotra ने भी इसी ओर इशारा करते हुए कहा है कि पश्चिम एशिया में जारी भू-राजनीतिक तनाव ने आर्थिक परिदृश्य को अनिश्चित बना दिया है।

दरअसल, जब दुनिया के किसी हिस्से में युद्ध या तनाव बढ़ता है, तो उसका असर केवल वहां तक सीमित नहीं रहता। कच्चे तेल की कीमतें बढ़ती हैं, परिवहन महंगा होता है और इसका सीधा असर खाद्य पदार्थों से लेकर रोजमर्रा की हर चीज पर पड़ता है। भारत जैसे देश, जो ऊर्जा आयात पर निर्भर हैं, वहां यह प्रभाव और भी अधिक गहरा होता है। यही कारण है कि महंगाई का यह अनुमान केवल एक संख्या नहीं, बल्कि आने वाले समय की संभावित चुनौतियों का संकेत है।

आरबीआई के अनुमान के अनुसार, वित्त वर्ष की पहली तिमाही में महंगाई दर करीब 4 प्रतिशत रह सकती है, जो अपेक्षाकृत संतुलित स्थिति को दर्शाती है। लेकिन जैसे-जैसे साल आगे बढ़ेगा, परिस्थितियों में बदलाव संभव है। मानसून की स्थिति, फसल उत्पादन, अंतरराष्ट्रीय बाजार में तेल की कीमतें—ये सभी कारक मिलकर महंगाई की दिशा तय करेंगे।

इस पूरे परिदृश्य में मौद्रिक नीति की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण हो जाती है। आरबीआई ने रेपो रेट को 5.25 प्रतिशत पर स्थिर रखने का फैसला किया है, जो यह दर्शाता है कि केंद्रीय बैंक फिलहाल संतुलन बनाए रखना चाहता है। रेपो रेट वह दर होती है, जिस पर बैंक आरबीआई से कर्ज लेते हैं। जब यह दर बढ़ती है, तो लोन महंगे हो जाते हैं और खर्च कम होता है, जिससे महंगाई नियंत्रित होती है। वहीं, दर कम होने पर बाजार में पैसा बढ़ता है और आर्थिक गतिविधियां तेज होती हैं।

इस बार आरबीआई का यह निर्णय एक संतुलित रणनीति को दर्शाता है—एक ओर महंगाई को नियंत्रण में रखना और दूसरी ओर आर्थिक विकास को भी गति देना। यह संतुलन साधना आसान नहीं है, क्योंकि थोड़ी सी चूक से या तो महंगाई बढ़ सकती है या फिर विकास की रफ्तार धीमी पड़ सकती है।

फरवरी में खुदरा महंगाई दर 3.21 प्रतिशत दर्ज की गई थी, जो एक राहत भरी स्थिति थी। लेकिन यह राहत स्थायी नहीं मानी जा सकती, क्योंकि वैश्विक और घरेलू परिस्थितियां तेजी से बदल रही हैं। खासकर मौसम में हो रहे बदलाव—जैसे असमय बारिश या सूखा—खाद्य उत्पादन को प्रभावित कर सकते हैं, जिससे कीमतों में उछाल आ सकता है।

विशेषज्ञों का मानना है कि आने वाला समय भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए एक परीक्षा की घड़ी हो सकता है। एक ओर वैश्विक अनिश्चितताएं हैं, तो दूसरी ओर घरेलू मांग और आपूर्ति का संतुलन बनाए रखने की चुनौती। ऐसे में आरबीआई की नीतियां और सरकार के फैसले दोनों ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

आम नागरिक के नजरिए से देखें, तो यह पूरा परिदृश्य सीधे उसके दैनिक जीवन से जुड़ा हुआ है। महंगाई बढ़ती है, तो घर का बजट बिगड़ता है; महंगाई नियंत्रित रहती है, तो राहत मिलती है। इसलिए आरबीआई का यह अनुमान केवल आर्थिक रिपोर्ट नहीं, बल्कि हर घर की रसोई, हर परिवार की योजना और हर व्यक्ति की जिंदगी से जुड़ी हुई एक महत्वपूर्ण खबर है।

आखिरकार, यह कहा जा सकता है कि भारत की अर्थव्यवस्था इस समय एक नाजुक संतुलन पर खड़ी है—जहां हर कदम सोच-समझकर उठाना जरूरी है। Reserve Bank of India की सतर्क निगरानी और समय पर लिए गए फैसले ही यह तय करेंगे कि आने वाले महीनों में महंगाई किस दिशा में जाएगी और देश की आर्थिक रफ्तार किस तरह आगे बढ़ेगी।

सियासत का बड़ा दांव या बदलती जमीन की आहट! जहूराबाद छोड़ अतरौलिया की ओर बढ़े ओमप्रकाश राजभर, 2027 से पहले पूर्वांचल में नई हलचल

(जीएनएस)। पूर्वांचल की राजनीति एक बार फिर अचानक करवट ले चुकी है। जहां कल तक सब कुछ तय माना जा रहा था, वहीं अब एक फैसले ने पूरे सियासी गणित को उलझा दिया है। Om Prakash Rajbhar का जहूराबाद छोड़कर अतरौलिया से चुनाव लड़ने का ऐलान सिर्फ एक सीट बदलने का फैसला नहीं है, बल्कि यह उस गहरी राजनीतिक रणनीति की झलक है, जो आने वाले 2027 के विधानसभा चुनाव को पूरी तरह नया मोड़ दे सकती है।

जहूराबाद, जिसे वर्षों से राजभर की राजनीतिक पहचान माना जाता रहा है, अब उनके लिए सुरक्षित नहीं रह गया—यह बात उनके इस फैसले से साफ झलकती है। यह वही सीट है जहां उन्होंने कई बार जीत हासिल की, लेकिन हर जीत के पीछे केवल उनका खुद का वोटबैंक नहीं था, बल्कि समीकरणों का जटिल खेल भी था। मुस्लिम और यादव वोटर्स के समर्थन के बिना यह जीत संभव नहीं थी, और यही समर्थन अब डगमगाता नजर आ रहा है।

Samajwadi Party की बदलती रणनीति ने इस सीट को और भी पेचीदा बना दिया है। पार्टी अब जहूराबाद को हल्के में लेने के मूड में नहीं दिख रही। अंसारी परिवार की संभावित सक्रियता, खासकर नूरिया अंसारी के नाम की चर्चा, इस बात का संकेत है कि मुस्लिम वोटबैंक पूरी तरह एकजुट हो सकता है—लेकिन

इस बार राजभर के खिलाफ। यदि ऐसा होता है, तो वह समीकरण, जिसने कभी उन्हें जीत दिलाई थी, अब उनकी सबसे बड़ी कमजोरी बन सकता है।

सिर्फ यही नहीं, जहूराबाद में राजपूत, ब्राह्मण और भूमिहार समुदायों की बढ़ती नाराजगी भी एक बड़ा संकेत है। यह नाराजगी धीरे-धीरे सियासी रूप ले चुकी है। ये वोटर्स संख्या में इतने हैं कि किसी भी उम्मीदवार की जीत-हार तय कर सकते हैं। ऐसे में राजभर के लिए जहूराबाद अब एक "कम्फर्ट ज़ोन" नहीं, बल्कि एक "रिस्क ज़ोन" बन चुका है।

यही वजह है कि उन्होंने अब अपनी नजरें अतरौलिया पर टिकाई हैं—एक ऐसी सीट जो Azamgarh जिले में आती है और जिसे लंबे समय से समाजवादी पार्टी का गढ़ माना जाता है। यहां चुनाव लड़ने का मतलब सिर्फ एक सीट जीतने की कोशिश नहीं है, बल्कि सीधे सपा के किले को चुनौती देना है। यह कदम बताता है कि राजभर अब रक्षात्मक नहीं, बल्कि आक्रामक राजनीति की ओर बढ़ रहे हैं।

अतरौलिया से चुनाव लड़ना एक जोखिम जरूर है, लेकिन इसमें संभावनाएं भी कम नहीं हैं। यहां राजभर अपने सामाजिक समीकरणों को नए सिरे से गढ़ने की कोशिश करेंगे। पिछड़े वर्गों में अपनी पकड़ मजबूत करने के साथ-साथ वह एनडीए के व्यापक समर्थन को भी अपने पक्ष में लाने की रणनीति पर काम कर सकते हैं। यह कदम उन्हें केवल एक विधायक नहीं, बल्कि पूर्वांचल की राजनीति में एक निर्णायक खिलाड़ी के रूप में स्थापित करने की दिशा में उठाया गया बड़ा दांव भी माना जा रहा है। इस पूरे घटनाक्रम का एक और अहम पहलू यह है कि राजभर अब जहूराबाद को पूरी तरह छोड़ नहीं रहे, बल्कि वहां अपने बेटे या किसी भरोसेमंद चेहरे को मैदान में उतार सकते हैं। यानी एक सीट छोड़कर दूसरी सीट पर जाना, दरअसल दो सीटों पर पकड़ बनाए रखने की रणनीति भी हो सकती है। अगर यह प्रयोग सफल होता है, तो सुभासपा का राजनीतिक दायरा पहले से कहीं अधिक बढ़ सकता है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यह फैसला केवल वर्तमान परिस्थितियों का परिणाम नहीं, बल्कि भविष्य की राजनीति को ध्यान में रखकर लिया गया कदम है। 2027 का चुनाव सिर्फ सीटों की लड़ाई नहीं होगा, बल्कि वर्चस्व की जंग होगी—और राजभर इस जंग में खुद को एक बड़े खिलाड़ी के रूप में स्थापित करना चाहते हैं।

अब सवाल यह नहीं है कि राजभर ने जहूराबाद क्यों छोड़ा, बल्कि यह है कि क्या अतरौलिया में उनका यह दांव कामयाब होगा? क्या वे सपा के मजबूत गढ़ में सेंध लगा पाएंगे, या फिर यह फैसला उनके लिए उल्टा पड़ जाएगा?

पूर्वांचल की राजनीति अब एक नए मोड़ पर खड़ी है, जहां हर चाल का असर दूर तक जाएगा। Om Prakash Rajbhar का यह फैसला आने वाले समय में न केवल उनके राजनीतिक भविष्य को तय करेगा, बल्कि उत्तर प्रदेश की राजनीति के पूरे समीकरण को भी बदल सकता है।

गोरखपुर में विकास की नई रफ्तार: तीन टाउनशिप से बदलेगी शहर की तस्वीर, 'मिनी स्मार्ट सिटी' बनने की ओर बड़ा कदम

(जीएनएस)। गोरखपुर। पूर्वांचल का प्रमुख शहर Gorakhpur अब तेजी से बदलती शहरी तस्वीर का नया उदाहरण बनने जा रहा है। जिस शहर को कभी केवल धार्मिक और सांस्कृतिक पहचान के लिए जाना जाता था, वहीं अब आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर, आवासीय परियोजनाओं और योजनाबद्ध विकास के जरिए एक नए युग में प्रवेश कर रहा है। गोरखपुर विकास प्राधिकरण द्वारा तीन बड़ी टाउनशिप को हरी झंडी मिलना इस बदलाव की सबसे बड़ी निशानी है—एक ऐसा कदम, जो न केवल शहर के नक्शे को बदलेगा, बल्कि यहां के लोगों के जीवन स्तर को भी नई ऊंचाई देगा। Gorakhpur Development Authority की 130वीं बोर्ड बैठक, जिसकी अध्यक्षता कमिश्नर Anil Dhingra ने की, केवल एक औपचारिक बैठक नहीं थी—यह गोरखपुर के भविष्य का रोडमैप तय करने वाला मंच था। इस बैठक में तीन प्रमुख टाउनशिप के डीपीआर को मंजूरी दी गई, जो आने वाले समय में शहर को एक आधुनिक और संगठित स्वरूप देने का काम करेंगी।

सोनौली मार्ग पर ताल जहदा में Omaxe Limited द्वारा प्रस्तावित इंटीग्रेटेड टाउनशिप, ताल कदला में ऐशप्रा की टाउनशिप और देवरिया रोड पर रामनगर कड़जहा में जीत एसोसिएट की परियोजना—ये तीनों मिलकर गोरखपुर में एक "हाउसिंग बूम" की शुरुआत कर रही हैं। यह सिर्फ मकानों का निर्माण नहीं है, बल्कि एक नई जीवनशैली का निर्माण है, जहां लोग बेहतर सुविधाओं, बेहतर कनेक्टिविटी और बेहतर वातावरण के साथ रह सकेंगे।

इन टाउनशिप की खास बात यह है कि ये केवल उच्च वर्ग के लिए नहीं, बल्कि अल्प आय वर्ग के लोगों के लिए भी आवास उपलब्ध कराएंगी। यानी यह विकास समावेशी होगा—जहां हर वर्ग के लोगों को अपने सपनों का घर मिल सकेगा। जल्द ही इन परियोजनाओं की बुकिंग शुरू होने जा रही है, जिससे रियल एस्टेट बाजार में भी नई हलचल देखने को मिलेगी।

इस बैठक में वित्तीय वर्ष 2026-27 के लिए करीब 1100 करोड़ रुपये के बजट को भी मंजूरी दी गई है। यह बजट पिछले वर्ष की तुलना में लगभग 408 करोड़ अधिक है, जो इस बात का संकेत है कि विकास कार्यों को अब और तेज गति दी जाएगी। यह केवल आंकड़ा नहीं, बल्कि शहर के इंफ्रास्ट्रक्चर, सड़कों, सुविधाओं और योजनाओं में आने वाले बड़े बदलाव की नींव है।

शहर के सौंदर्यीकरण और पहचान को मजबूत करने के लिए पांच भव्य प्रवेश द्वार बनाने का निर्णय भी लिया गया है। देवरिया, वाराणसी, लखनऊ और कुशीनगर रोड पर बनने वाले ये गेट केवल रास्ते नहीं होंगे, बल्कि शहर की नई पहचान का प्रतीक बनेंगे। इनके साथ आधुनिक लाइटिंग और सुंदरीकरण कार्य भी किए जाएंगे, जिससे गोरखपुर में प्रवेश करते ही एक अलग ही अनुभव मिलेगा। इसके साथ ही प्रशासनिक और सुरक्षा ढांचे को भी मजबूत किया जा रहा है। ग्राम कोनी में प्रस्तावित पुलिस प्रशिक्षण विद्यालय की क्षमता को दोगुना करने का फैसला लिया गया है, वहीं पीएससी महिला बटालियन के लिए भूमि उपयोग परिवर्तन को भी मंजूरी दी गई है। यह दिखाता है कि विकास केवल भवन निर्माण तक सीमित नहीं, बल्कि सुरक्षा और प्रशासनिक मजबूती भी इसका हिस्सा है।

"गुरुकुल सिटी" योजना के तहत सड़कों के निर्माण को जल्द शुरू करने के निर्देश भी दिए गए हैं, जो शहर के ट्रैफिक और कनेक्टिविटी को बेहतर बनाएंगे। वहीं विभिन्न गांवों में भूमि अधिग्रहण के प्रस्ताव को मंजूरी मिलना इस बात का संकेत है कि गोरखपुर का विस्तार अब योजनाबद्ध तरीके से आगे बढ़ेगा।

मुंबई में डिजिटल दौड़ में जियो नंबर वन, 5G स्पीड और कॉल क्वालिटी में बनाया नया रिकॉर्ड

(जीएनएस)। मुंबई। सपनों की नगरी मुंबई, जहां हर पल भागता है, हर सेकंड मायने रखता है और हर कनेक्शन किसी न किसी कहानी को जोड़ता है—वहीं अब डिजिटल दुनिया में भी एक नई क्रांति लिखी जा रही है। इस तेज रफ्तार शहर में जब लोग सुबह लोकल ट्रेन पकड़ने की जल्दी में होते हैं, जब ऑफिस जाते हुए मोबाइल पर मीटिंग अटेंड कर रहे होते हैं, जब रात को परिवार से वीडियो कॉल पर बातें करते हैं—तब उन्हें सबसे ज्यादा जरूरत होती है एक ऐसे नेटवर्क की, जो हर हाल में उनका साथ दे। और इसी जरूरत को पूरा करते हुए Reliance Jio ने मुंबई और उसके उपनगरों में अपने प्रदर्शन से एक नई मिसाल कायम कर दी है। Telecom Regulatory Authority of India की फरवरी 2026 की रिपोर्ट ने इस बात को पुख्ता कर दिया है कि जियो केवल एक टेलीकॉम कंपनी नहीं, बल्कि करोड़ों लोगों के डिजिटल जीवन की धड़कन बन चुका है। रिपोर्ट के आंकड़े सिर्फ नंबर नहीं हैं, बल्कि उन लाखों यूजर्स के अनुभव की कहानी हैं, जो हर दिन अपने फोन के जरिए दुनिया से जुड़े रहते हैं। 244.43 Mbps की औसत 5G डाउनलोड स्पीड और 39.05 Mbps की अपलोड स्पीड केवल तकनीकी उपलब्धि नहीं, बल्कि यह उस भरोसे की पहचान है, जो यूजर्स ने जियो पर जताया है।

कल्पना कीजिए एक ऐसे दिन की, जब एक छात्र ऑनलाइन क्लास में बैठा है और उसे हर सेकंड साफ वीडियो चाहिए, एक बिजनेसमैन वीडियो कॉन्फ्रेंस में डील फाइनल कर रहा है, एक गेमर रियल-टाइम में मुकाबला जीतने की कोशिश कर रहा है, और एक परिवार दूर बैठे अपने रिश्तेदार से वीडियो कॉल पर जुड़ा हुआ है। इन सभी के लिए एक

ही चीज सबसे जरूरी है—बिना रुकावट का कनेक्शन। जियो ने इसी जरूरत को समझते हुए अपने नेटवर्क को इस स्तर तक पहुंचाया है, जहां बफरिंग, कॉल ड्रॉप और धीमी स्पीड जैसी समस्याएं लगभग खत्म हो चुकी हैं।

मुंबई के मुंब्रा की गलियों से लेकर वाशी के कॉर्पोरेट हब तक, दहिसर की भीड़भाड़ से लेकर ऐरोली और घनसोली के उभरते टेक्नोलॉजी पार्क तक—हर जगह जियो का नेटवर्क अपनी मजबूती का अहसास कराता है। जब लोकल ट्रेन प्लेटफॉर्म पर हजारों लोग एक साथ इंटरनेट का इस्तेमाल कर रहे होते हैं, तब भी नेटवर्क का स्थिर रहना अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि है। अटल सेतु जैसे व्यस्त मार्गों पर चलते हुए भी वीडियो कॉल बिना रुके चलती रहती है—यह केवल तकनीक नहीं, बल्कि एक भरोसेमंद अनुभव है।

वॉइस कॉल की दुनिया में भी जियो ने अपनी अलग पहचान बनाई है। एक समय था जब कॉल ड्रॉप और आवाज की अस्पष्टता लोगों के लिए सबसे बड़ी परेशानी थी। लेकिन अब हालात बदल चुके हैं। कॉल सेटअप का तेज समय, लगभग शून्य कॉल ड्रॉप और क्रिस्टल क्लियर आवाज ने बातचीत को पहले से कहीं अधिक सहज बना दिया है। अब लोग बिना किसी चिंता के लंबी बातचीत कर सकते हैं, क्योंकि उन्हें पता है कि उनका नेटवर्क उनका साथ नहीं छोड़ेगा। लेटेंसी—एक ऐसा शब्द जिसे आम लोग शायद कम समझते हैं, लेकिन इसका असर हर डिजिटल गतिविधि पर पड़ता है। जियो ने इस क्षेत्र में भी शानदार प्रदर्शन किया है। कम लेटेंसी का मतलब है कि आपकी हर क्लिक पर तुरंत प्रतिक्रिया मिले। चाहे आप ऑनलाइन गेम खेल रहे हों, लाइव स्ट्रीम देख रहे हों या किसी जरूरी मीटिंग में शामिल हों—हर जगह आपको एक रियल-टाइम अनुभव मिलता है, जो पहले केवल कल्पना में संभव था। इस पूरी कहानी का सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह है कि जियो ने केवल शहर के पॉश इलाकों पर ध्यान नहीं दिया, बल्कि उन क्षेत्रों में भी अपनी पकड़ मजबूत की है, जहां नेटवर्क की सबसे ज्यादा जरूरत होती है। औद्योगिक क्षेत्र, रेलवे स्टेशन, भीड़भाड़ वाले बाजार—हर जगह जियो ने अपने नेटवर्क को इस तरह विकसित किया है कि वह हर परिस्थिति में बेहतर प्रदर्शन कर सके।

विशेषज्ञों का मानना है कि यह सफलता अचानक नहीं आई है। इसके पीछे वर्षों की योजना, भारी निवेश और नई तकनीकों को अपनाने की निरंतर कोशिश है। जियो ने अपने इंफ्रास्ट्रक्चर को इस तरह तैयार किया है कि वह भविष्य की जरूरतों को भी पूरा कर सके। यही कारण है कि आज यह कंपनी केवल वर्तमान में ही नहीं, बल्कि आने वाले डिजिटल युग में भी अग्रणी बनने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रही है। मुंबई जैसे शहर में, जहां हर व्यक्ति की जिंदगी इंटरनेट से जुड़ी हुई है, वहां जियो का यह प्रदर्शन केवल एक उपलब्धि नहीं, बल्कि एक बदलाव का संकेत है। यह बदलाव उस भविष्य की ओर इशारा करता है, जहां हर व्यक्ति के पास तेज, सुरक्षित और भरोसेमंद इंटरनेट होगा। आज जब मुंबई की सड़कों पर ट्रैफिक दौड़ रहा है, लोकल ट्रेनें अपने समय पर चल रही हैं और लोग अपने-अपने काम में व्यस्त हैं, उसी समय एक अदृश्य नेटवर्क भी पूरे शहर को जोड़ रहा है—एक ऐसा नेटवर्क जो हर कॉल, हर मैसेज और हर क्लिक के जरिए लोगों को करीब ला रहा है। और इस डिजिटल कनेक्टिविटी की इस नई कहानी में Reliance Jio ने खुद को सबसे आगे साबित कर दिया है।